संवादसेतु

मीडिया का आत्मावलोकन

अंक 17 | पृष्ठ 22 | सितंबर, 2018 | नई दिल्ली

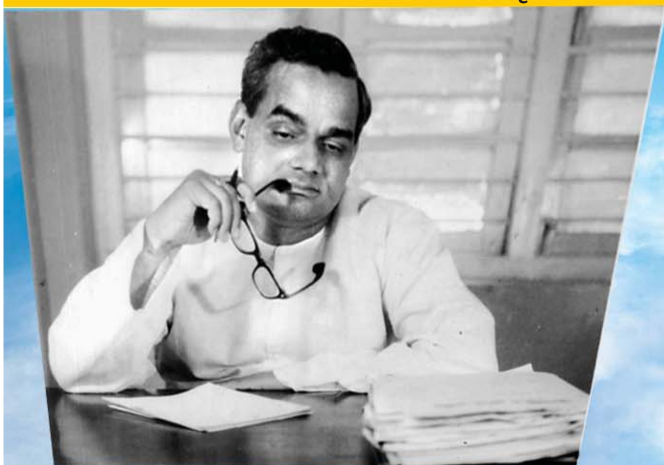

आवरण कथा

पत्रकारीय अनुभवों की अटल पूंजी

अनछुआ कोना

सेकुलरी पत्रकारिता का नया आयाम

Times of India
@timesofindia
Follow

Maharashtra 'godman' forces men into unnatural sex, held toi.in/w1pQGY/a24gk via @TOICitiesNews

Translate Tweet

10:30 AM - 23 Jul 2018

2 Retweets 13 Likes

संपादकीय

संपादक

आशुतोष

कार्यकारी-संपादक

डा. जयप्रकाश सिंह

उप-संपादक

चन्दन आनन्द

रविंद्र सिंह भड़वाल

ई-मेल :

samvadsetu2011@gmail.com

फेसबुक पेज

@samvadsetu2011

अनुरोध

संवादसेतु की इस पहल पर आपकी टिप्पणी एवं सुझावों का स्वागत है। अपनी टिप्पणी एवं सुझाव कृपया उपरोक्त ई-मेल पर अवश्य भेजे।

'संवादसेतु' मीडिया सरोकारों से जुड़े पत्रकारों की रचनात्मक पहल है। 'संवादसेतु' अपने लेखकों तथा विषय की स्पष्टता के लिए इंटरनेट से ली गई सामग्री के रचनाकारों का भी आभार व्यक्त करता है। इसमें सभी पद अवैतनिक हैं।

अनुक्रम

आवरण कथा

पत्रकारीय अनुभवों की अटल पूंजी

(पृष्ठ 4-5-6)

अनछुआ कोना

सेकुलरी पत्रकारिता का नया आयाम

(पृष्ठ 7-8-9)

कला संवाद

...सा परा कला (पृष्ठ 10-11-12)

व्यक्तित्व

राष्ट्रवादी पत्रकारिता की विचार-वीथी
दीनदयाल उपाध्याय (पृष्ठ 13-14)

पुस्तक समीक्षा

स्वप्नों के पन्ने, दुरभिसंधियों का दस्तावेज

(पृष्ठ 15-16)

फिल्म समीक्षा

पलटन (पृष्ठ 17-18)

टर्म

#हैशटैग (पृष्ठ 19)

आयोजन

एमसीयू का सत्रारंभ समारोह

(पृष्ठ 20-21-22)

संपादकीय

भारतीयता तो भारत के प्राणों में रची-बसी है इसलिये उस पर कुछ समय के लिये आवरण पड़ सकना संभव है, उसे जड़ से उखाड़ फेंकना असंभव। लेकिन पत्रकारिता के साथ ऐसी स्थिति नहीं है। विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक और नया मीडिया, जिसकी जड़ें अभी ठीक से जम भी नहीं सकी हैं, अपनी विश्वसनीयता पर इसी प्रकार कुठाराघात करता रहा तो भय है कि जल्दी ही अपनी चमक खो देगा...

मीडिया को हिंदी में प्राय: संवाद माध्यम कहने का चलन है। लेकिन व्यवहार में जो सामने आता वह संवाद तो नहीं है। तथ्यों के आवरण में अपने विचारों को पाठकों पर थोपने का काम आजकल अधिकांश समाचार माध्यम कर रहे हैं। इनमें पत्रकार स्वयं भी हैं और पत्र समूह भी। पाठकों का सत्य जानने का अधिकार और पत्र के सूचित करने के साथ ही शिक्षित करने के कर्तव्य की अवहेलना प्राय: दिखायी देती है।

सभी कुछ संवाद के दायरे में समेटने के स्थान पर आदि शंकराचार्य ने संवाद को चार भागों में वर्गीकृत किया है। पहला है संवाद, दूसरा वाद, तीसरा जल्प और चौथा वितण्डा। शंकराचार्य के अनुसार 'संवाद' वह है जो गुरु और शिष्य के बीच होता है जिसमें शिष्य प्रश्न तो पूछता है किन्तु उसे गुरु और उसके ज्ञान पर पूर्ण विश्वास होता है। मन में उपजी शंकाओं के निवारण की इस सहज प्रक्रिया में ज्ञान प्राप्त करने वाले का समर्पण भाव आवश्यक है। कृष्णार्जुन संवाद इसी कोटि का था।

'वाद' दो समान स्तर के व्यक्तियों अथवा समूहों के बीच होता है जिसका उद्देश्य सत्य की खोज होता है। यह विमर्श किसी एक बिन्दु पर सहमति बनने तक चलता है और अंतत: सभी उसे स्वीकार कर लेते हैं। मण्डन मिश्र और शंकराचार्य के बीच का संवाद इसका उदाहरण है। वहीं 'जल्प' के अंतर्गत पूर्वाग्रहग्रस्त विमर्शकर्ता स्वयं के पक्ष को सही और दूसरे के पक्ष को गलत सिद्ध करने के लिये उद्यत रहते हैं और तर्क, वितर्क और कुतर्क, किसी भी माध्यम से अपनी बात को स्थापित करने के लिये प्रयत्न करते हैं। इसमें कोई भी पराजय स्वीकार नहीं करता इसलिये कोई निष्कर्ष भी नहीं निकलता, लेकिन इसका एक लाभ यह अवश्य होता है कि श्रोताओं को अपना मत निश्चित करने में सहायता मिलती है। आजकल टीवी पर होने वाली बहस इसका सटीक उदाहरण है।

'वितण्डा' आज की राजनीति के चलन और उसके आधार पर मीडिया के स्वर को प्रकट करता है। इसमें विमर्श कर रहे व्यक्ति को भी अपने पक्ष की सत्यता पर विश्वास नहीं होता, किन्तु विपक्षी को परास्त करने के उद्देश्य से उसकी विश्वसनीयता को चोट पहुंचा कर बाजी जीत लेना ही उद्देश्य होता है। इसमें संभव है कि विपक्षी सत्य के पक्ष में हो, किन्तु उसे क्योंकि विपक्षी ने कहा है इसलिये उस सत्य को स्वीकार करने के लिये वितण्डावादी तैयार नहीं होता।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यदि आज की मीडिया का मूल्यांकन किया जाय तो उसे 'जल्प' अथवा 'वितण्डा' में ही रखा जा सकता है। 'संवाद' का तो आज की परिभाषा में मीडिया कार्यशैली के साथ ताल-मेल बन भी नहीं सकता, किन्तु 'वाद' के लिये भी आज कम ही अवकाश है। 'सबसे तेज' होने की तेजी में सहमति बनने की प्रतीक्षा कोई समाचार माध्यम नहीं कर सकता। साथ ही प्रवृत्ति का भी संकट है जो सहमति बनाने के बजाय सहमति थोपने में ज्यादा यकीन रखती है।

ऐसी परिस्थिति में जड़ों से विलग हो चुकी पत्रकारिता, 'चुकी' पत्रकारिता की श्रेणी में ही है। भारतीयता से दूर जाने अथवा उसका उपहास करने, मूल्यों को नकारने को ही आधुनिकता मानने वाले पत्रकार वस्तुत: भारतीयता को कम, स्वयं पत्रकारिता को अधिक चोट पहुंचा रहे हैं। भारतीयता तो भारत के प्राणों में रची-बसी है इसलिये उस पर कुछ समय के लिये आवरण पड़ सकना संभव है, उसे जड़ से उखाड़ फेंकना असंभव। लेकिन पत्रकारिता के साथ ऐसी स्थिति नहीं है। विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक और नया मीडिया, जिसकी जड़ें अभी ठीक से जम भी नहीं सकी हैं, अपनी विश्वसनीयता पर इसी प्रकार कुठाराघात करता रहा तो भय है कि जल्दी ही अपनी चमक खो देगा।

मीडिया के आत्मावलोकन के इस प्रयास पर आपकी प्रतिक्रिया अपेक्षित है।

-आपका संपादक

पत्रकारीय अनुभवों की अटल पूंजी

❒ डा. जयप्रकाश सिंह

व्यवस्था का बहुध्रुवीय होना भारत की अनूठी विशेषता रही है। परम्परागत रूप से राज, समाज और संत मिलकर इस देश में नीति-निर्णयन की इन्द्रधनुषीय व्यवस्था को रचते थे। यह व्यवस्था स्वर्णिम संतुलन पर आधारित थी और सभी अंग अपनी सीमाओं और सामर्थ्य के बारे में सजग थे। व्यवस्था अतियों का शिकार न हो इसके लिए नियमित अंतराल पर विचार-विनिमय की परम्पराएं विकसित हुईं। देश के अलग-अलग हिस्सों में होने वाले महाकुंभ ऐसी ही परम्परा का एक उदाहरण हैं। बाद में संत-राज-समाज का यह संतुलन टूटा। पहले निरंतर आक्रमणों के कारण समाज का राजनीतिकरण हुआ और बाद में आंदोलनों के उभार और लोकतांत्रिक शासन प्रणाली ने राजनीति का मीडियाकरण कर दिया। एक बार संतुलन टूटने पर संत-सत्ता की परिधि सिकुड़ती चली गई और मीडिया व्यवस्था संचालन का एक प्रमुख घटक बन गया।

औपनिवेशिक शासनकाल में ही भारतीय नेतृत्व ने व्यवस्था संचालन और वैचारिक आंदोलनों में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचान लिया था। संभवतः इसी कारण उस दौर के सभी बड़े नेता किसी न किसी रूप में पत्रकारिता कर रहे थे और पत्रकारिता के जरिए राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे। बाल गंगाधर तिलक से लेकर महर्षि अरविंद तक, मदन मोहन मालवीय से लेकर महात्मा गांधी तक, सभी

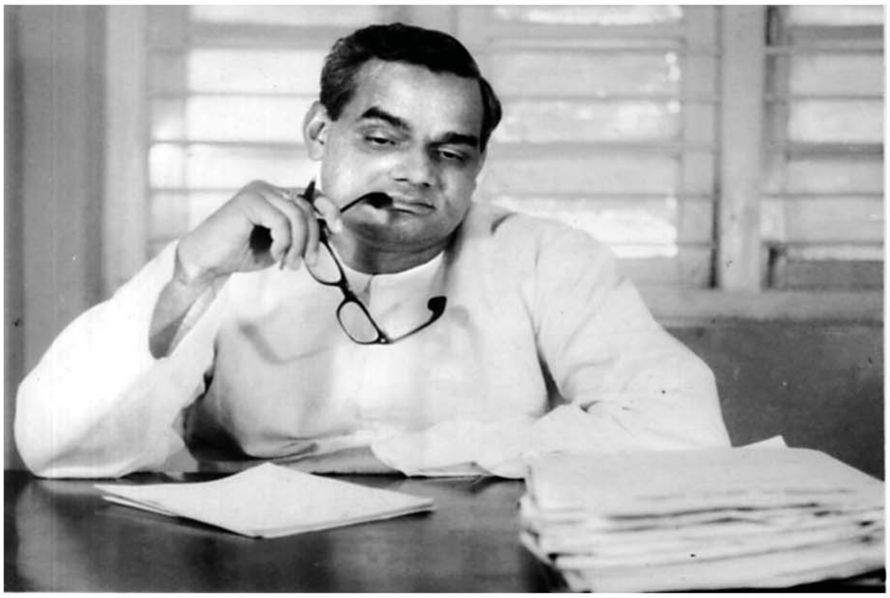

ने या तो मनमाफिक व्यवस्था गढ़ने या फिर व्यवस्था में बदलाव के लिए पत्रकारिता का सहारा लिया।

उन दिनों पत्रकारीय अनुभव का होना सार्वजनिक जीवन में सक्रियता की एक पूर्व शर्त जैसी थी। इसलिए अटल बिहारी वाजपेयी जैसा भारतीयता के प्रति संवेदनशील व्यक्तित्व यदि अपने शुरुआती दिनों में पत्रकारिता के प्रति आकर्षित हुआ तो यह बहुत स्वाभाविक ही था। श्यामा प्रसाद मुखर्जी की रहस्यमय स्थितियों में मौत के बाद दीनदयाल उपाध्याय की देख-रेख में अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी की जिस जोड़ी ने लंबे समय तक राजनीतिक क्षितिज पर अपना प्रभाव बनाए रखा, वह दोनों पेशे से पत्रकार थे।

वाजपेयी के सार्वजनिक जीवन की पहली पाठशाला पत्रकारिता थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्पर्क के कारण उनके विचारों को राष्ट्रीय दिशा मिल चुकी थी। इस सांगठनिक सम्पर्क से ही उनमें सामाजिक कार्य करने की भावना मजबूत हुई और इस भावना की सार्वजनिक अभिव्यक्ति का पहला माध्यम पत्रकारिता बनी। उनकी पत्रकारिता की राह इस मामले में दुष्कर थी क्योंकि उस समय मीडिया जगत में राष्ट्रीयता को मुखरित करने वाले मंच नहीं थे। उन्हें राष्ट्रवादी पत्रकारिता की शब्दावली और उसको अभिव्यक्त करने वाले मंच दोनों को गढ़ना था। पत्रकारिता में काम करने वाले इस दबाव को अच्छी तरह जानते हैं कि पत्रकारीय और प्रबंधकीय कार्यों को एक साथ निभाना कितना कठिन होता है। उन्होंने दोनों भूमिकाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

उपलब्ध साक्ष्य बताते हैं कि वह बनारस में पहली बार पत्रकारिता से वाबस्ता हुए थे। उनके पत्रकारीय जीवन की शुरुआत बनारस से हुई मानी जाती है। हिंदी पत्रकारिता के इस गढ़ में उनको पहली बार पत्रकारीय मंच उपलब्ध हुआ। उनके पत्रकारिता जीवन की शुरुआत वाराणसी के समाचार नामक अखबार से हुई थी। इस अखबार की शुरुआत 1942 में भईया जी बनारसी ने की थी। अटल जी ने 1977 में एक चुनावी रैली में इस बात की जानकारी खुद दी थी। इस अखबार के लिए नानाजी देशमुख और बाला साहब देवरस भी लिखा करते थे। उस समय इस अखबार का कार्यालय चेतगंज स्थित हबीबपुरा मोहल्ले में होता था। अटल जी के पत्रकारीय जीवन और तत्कालीन परिस्थितियों का संक्षिप्त, सरस और तथ्यपूर्ण विवरण देते हुए राष्ट्रधर्म से सम्बंधित रहे पत्रकार विजय कुमार लिखते हैं कि 'स्वतंत्रता मिलते ही संघ ने हिन्दी पत्र जगत में प्रवेश का निश्चय किया। उन दिनों उत्तर प्रदेश में भाऊराव देवरस प्रांत प्रचारक और दीनदयाल जी उनके सहायक थे। इसके लिए दोनों की निगाह प्रखर वक्ता और कवि अटल बिहारी वाजपेयी पर गयी। प्रखर लेखनी के धनी जिला प्रचारक राजीवलोचन अग्निहोत्री को भी साथ में जोड़ लिया गया और रक्षाबंधन (31 अगस्त 1947) को अटल जी तथा राजीव जी के संयुक्त सम्पादकत्व में मासिक पत्रिका 'राष्ट्रधर्म' का पहला अंक प्रकाशित हुआ। इससे पूर्व पत्रिका के नाम का प्रश्न आया। तब मुख्यत: छात्रों के बीच ही संघ का काम था। माननीय भाऊराव लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रावास की सीढ़ियों पर छात्रों के साथ बैठे थे। वहीं देहरादून के एक छात्र विद्यासागर ने 'राष्ट्रधर्म' नाम सुझाया, जो सबको पंसद आया। राष्ट्रधर्म के प्रथम अंक के प्रथम पृष्ठ पर अटल जी की निम्न कविता प्रकाशित हुई थी। हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन रग-रग हिन्दू मेरा परिचय। इस अंक की तीन हजार प्रतियां छपी थीं। उन दिनों किसी हिन्दी पत्रिका की प्रसार संख्या पांच सौ से अधिक नहीं थी। इसलिए जब तीन हजार प्रतियों का आदेश प्रेस को दिया गया, तो प्रेस वाला समझ गया कि इन लड़कों को शायद कहीं से मोटी राशि हाथ लग गई है। या कोई ऐसा धनी आदमी मिल गया है, जिसे साहित्य सेवा की सनक सवार हुई है। पर वे तीन हजार प्रतियां तो हाथोंहाथ समाप्त हो गईं, पांच सौ प्रतियां और छपवानी पड़ीं। दूसरे अंक में आठ हजार और तीसरे अंक में बारह हजार प्रतियां छपीं। इससे उत्साहित होकर एक साप्ताहिक पत्र निकालने का भी निर्णय हुआ और मकर संक्रांति (14 जनवरी, 1948) पर 'पांचजन्य' का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया। अटल जी पर दोनों पत्रों के सम्पादन का भार आ गया।'

उस समय इन पत्र-पत्रिकाओं के संचालन के लिए आवश्यक तकनीकी अधोसंरचना और मानव संसाधन की भयंकर किल्लत थी। ऐसी स्थितियां नहीं थीं कि पूरी तरह इन समाचार पत्रों की अंतर्वस्तु पर केन्द्रित हुआ जा सके। पत्रकारीय टीम की ऊर्जा का एक बड़ा हिस्सा अन्य छोटे-मोटे कार्यों को निपटाने में चला जाता था। पत्रकारिता में डेडलाइन का अपना दबाव होता है। पत्र-पत्रिकाओं को एक बार प्रारंभ करने के बाद कठिनाइयों के नाम पर उनकी तिथि को आगे-पीछे करने का कोई स्थान नहीं बचता। ऐसा एक बार भी हुआ तो आपकी विश्वसनीयता रसातल में पहुंच जाती है। अटल जी ने इन जटिल पत्रकारीय परिस्थियों के अनुरूप खुद को ढाला।

राजनीति की तरह पत्रकारिता भी 'ऑल टाइम प्रोफेशन' है। आप को न केवल घट रही घटनाओं के बारे में सजग रहना पड़ता है, बल्कि आकार लेती घटनाओं पर पैनी नजर रखनी पड़ती है। यह कार्य अपनी पूरी ऊर्जा लगाकर और पूरे समय का निवेश कर ही ठीक ढंग से किया जा सकता है। राजनीति में आने से पूर्व ही पत्रकारिता ने अटल जी में 'चौबीसों घंटे, बारहों महीने' अपने कार्य के प्रति समर्पित रहने की कला विकसित कर दी थी...

बकौल विजय कुमार 'कोई कर्मचारी बीमार या छुट्टी पर हुआ, तो दिक्कत आती थी। इसलिए अटल जी, दीनदयाल जी और भाऊराव ने भी कम्पोजिंग और प्रेस के बाकी काम सीख लिये। कभी-कभी तो मशीन चलाते हुए सब इतने थक जाते थे कि चटाई पर सिर के नीचे ईंट लगाकर पस्त हो जाते थे। बाद में दैनिक स्वदेश का प्रकाशन शुरू होने पर अटल जी को उसमें भेज दिया गया। तब काम और बढ़ गया। दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों का एक साथ सम्पादन आसान नहीं था, पर अटल जी सहर्ष सब करते थे। क्योंकि उनका पहला प्यार पत्रकारिता से ही था। उन्होंने इसे कई बार सार्वजनिक रूप से स्वीकार भी किया है।'

बाद में, प्रत्येक परिस्थिति से जूझते हुए अपना काम करने की यह पत्रकारीय प्रवृत्ति उनकी राजनीतिक कार्यशैली का भी अभिन्न हिस्सा बन गई। अपनी राजनीतिक शख्सियत को जिस तरह अटल जी ने बुना, उसमें पत्रकारीय अनुभवों की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। एक पत्रकार को हमेशा ही यह पता होता है कि वह अपना काम किसी निर्वात में नहीं कर रहा है। उसे देश, काल, पात्र के प्रति सजग ही नहीं रहना पड़ता, बल्कि उनकी सीमाओं-संभावनाओं का आकलन भी करते रहना पड़ता है। इसी कारण पत्रकारिता का पेशा यूटोपिया का शिकार नहीं होता। उसे अपने आदर्श देश, काल, पात्र की सीमाओं के भीतर ही खोजने और परोसने पड़ते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि पत्रकारिता में व्यापक बदलावों और उदात्त आदर्शों के लिए स्पेस नहीं होता। होता है, लेकिन वह पुनरुत्थानवादी रवैया नहीं अपना सकता। सच को युगानुकूल शब्दावली में ढालने का काम उसको करना होता है, इसलिए पत्रकारिता आदर्शों के नवोत्थान पर जोर देती है। आदर्श की भावना को नए रूपों-स्वरूपों में प्रकट करने की कोशिश करती है।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में भी राजनीति यूटोपिक होने का खतरा नहीं उठा सकती। उसमें भी एक झटके में आत्यंतिक आदर्श को हासिल करने के बजाय उपलब्ध परिस्थितियों में अधिकतम प्राप्त करने की रणनीति का सहारा लेना पड़ता है। लक्ष्य भले ही आमूलचूल परिवर्तन करने वाले हों लेकिन उन्हें प्राप्त करने की रणनीति कदम-दर-कदम की बनानी पड़ती है। दोनों पेशों की प्रकृति में पाई जाने वाली इस समानता से पत्रकारीय अनुभवों की पूंजी राजनीतिक चातुर्य का कारण बन जाती है। यथार्थ की भूमि पर आदर्श गढ़ने का पत्रकारीय सलीका राजनीति में न केवल सफल होता है, बल्कि राजनीति को आदर्श से जोड़े रखने में सहायक भी होता है।

राजनीति की तरह पत्रकारिता भी 'ऑल टाइम प्रोफेशन' है। आप को न केवल घट रही घटनाओं के बारे में सजग रहना पड़ता है, बल्कि आकार लेती घटनाओं पर पैनी नजर रखनी पड़ती है। यह कार्य अपनी पूरी ऊर्जा लगाकर और पूरे समय का निवेश कर ही ठीक ढंग से किया जा सकता है। राजनीति में आने से पूर्व ही पत्रकारिता ने अटल जी में 'चौबीसों घंटे, बारहों महीने' अपने कार्य के प्रति समर्पित रहने की कला विकसित कर दी थी।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में राजनीतिक शक्ति की इकाई नागरिक होते हैं। हर नागरिक और उसका अभिमत समान रूप से महत्वपूर्ण होता है। जनता की नब्ज पर नजर बनाए रखना और जनमत को अपने पक्ष में बनाए रखना सत्ता तक पहुंचने के लिए आवश्यक होते हैं। अटल जी अन्य नेताओं की अपेक्षा मीडिया से बेहतर तालमेल बनाए रखने में सफल रहे और अपने वक्तृत्व में उन मुद्दों और शैलियों का समावेश कर सके, जो जनमन को छूते हैं, तो इसका एक बड़ा कारण उनके पूर्व के पत्रकारीय अनुभव हैं।

पत्रकारिता की एक अन्य खूबी संवाद की परम्परा पर विश्वास है। सभी पक्षों से संवाद करने और उन्हें उचित स्पेस देने को एक महत्वपूर्ण पत्रकारीय मूल्य की तरह वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया जाता है, लेकिन भारत में संवाद का अतिरिक्त महत्व है क्योंकि यहां पर संवाद की प्रक्रिया को धार्मिक और मानवीय मूल्य के तौर भी स्वीकार किया जाता है। अटल जी के व्यक्तित्व में संवाद के लिए व्यापक स्पेस था, संभवत: इसी कारण वह दलगत राजनीति से परे जाकर स्वीकृत हुए।

पाकिस्तान के मामले में और आंतरिक राजनीति के संदर्भों में भी उन पर अत्यधिक सदाशयता का आरोप लगा तो इसका कारण अति संवादी होना भी हो सकता है। यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि पत्रकारीय अनुभवों की उनकी पूंजी बाद में उनके लिए राजनीतिक तजुर्बा बन गई थी।

सेकुलरी पत्रकारिता का नया आयाम

कुछ खास पक्षों के लिए वह अधिक सहृदय बन जात है जबकि कुछ अन्य पक्षों के लिए अनावश्यक रूप से उत्साही। अब इस तरह की अनावश्यक संतुलन लोगों में खीझ पैदा कर रहा है और लोग अपनी प्रतिक्रियाएं भी दर्ज कराने लगे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण हाल में ओडिशा में देखने का मिला...

❒ **समन्वय नंद**

तथ्यों को दरकिनार करते हुए अनावश्यक संतुलन स्थापित करने की कोशिशें भारतीय मीडिया का स्थायी भाव बनता जा रहा है। कुछ खास पक्षों के लिए वह अधिक सहृदय बन जात है जबकि कुछ अन्य पक्षों के लिए अनावश्यक रूप से उत्साही। अब इस तरह की अनावश्यक संतुलन लोगों में खीझ पैदा कर रहा है और लोग अपनी प्रतिक्रियाएं भी दर्ज कराने लगे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण हाल में ओडिशा में देखने को मिला। मीडिया सोशल मीडिया साइट फेसबुक पर देवदत्त जेना नामक एक व्यक्ति ने एक पोस्ट की थी। संबंधित पोस्ट ओडिशा के कटक से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'समाज' अखबार में प्रकाशित खबर पर आधारित थी, जिसका शीर्षक था अनाथ हिन्दू लड़की को रक्त देकर मुसलमान युवक ने दिया जीवनदान। देवदत्त ने इस पोस्ट को संपादक के नाम पत्र के रूप में लिखा था।

उन्होंने लिखा–

महाशय,

30 जुलाई को समाज अखबार के मुखपृष्ठ पर एक सनसनीखेज व समाज में विभेद पैदा करने वाली खबर के संबंध में अपना मत व्यक्त कर रहा हूं। खबर का शीर्षक है अनाथ हिन्दू लड़की को रक्त देकर मुसलमान युवक ने दिया जीवनदान।

रक्तदान निश्चित रूप से एक महत कार्य है। लेकिन इस तरह के महत कार्य को धर्म, वर्ण, पंथ के साथ जोड़ने का महत उद्देश्य क्या हो सकता है। वास्तव में यह चिंताजनक विषय है। समाज के एक अति संवेदनशील हिस्से पर हाथ डालकर समाज के प्रहरी के रूप में कार्य करने वाला मीडिया इससे समाज में क्या संदेश देना चाहता है? इस तरह का समाचार प्रसारित कर एक पंथनिरपेक्ष राष्ट्र में क्या जहर के बीज नहीं बोये जा रहे हैं? अब समाचार की विषयवस्तु पर आते हैं। एक युवक ने

11-year-old boy's rescue reveals 'trafficking' prevalent at madrassas, Veda pathshalas

Ekatha.Ann@timesgroup.com

Chennai: Child protection officers and Childline volunteers rescued an 11-year-old boy, from Bihar, who they suspect had been trafficked after he escaped from a madrassa in Kodungaiyur.

The boy was found by Childline volunteers near Avadi railway station on Wednesday and produced before the child welfare committee, Chennai, on Saturday.

"At the time of rescue, the only information the child could tell us was he stayed in a madrassa," said a member of the district child protection unit (DCPU).

A chit in his pocket that finally led the team to madrassa Usman Bin Affan in Kodungaiyur. Although staff at the religious residential school said the boy studied at their facility, they had no documents to show who admit- himself as his uncle, bringing the child in early July. "When we asked teachers for their identity cards, they had none," said a DCPU staff.

The child was housed in an open shelter for three days. Based on the information he gave, officials contacted his family in Deolia, Bihar. A man, who identified himself as his brother, came to claim him on Saturday. "We sent the child back home with him after checking their Aadhaar and ration cards," said CWC member Sheila Charles Mohan. The committee said it would conduct an inspection of the madrassa soon, where 60 other children, most of them from impoverished districts in Bihar, Assam, Odisha and West Bengal are housed.

Since January, Railway Childline, Government Railway Police and the DCPU have rescued at least 25 chil-

Chennai, most of them had escaped from schools in Kodungaiyur, Adyar and Anna Nagar. "All of them were in the 9-13 years age group with little or no formal education. They were from poor families," said a co-ordinator of Railway Childline. While a majority of them were sent back to their families, a few of them are in the government boys' home, Royapuram.

In 2014, a Madras high court bench, headed by then

ties to ensure transparency, accountability and documentation of children in such institutions to protect them from exploitation or abuse.

The order was based on a petition filed by advocacy group ChangeIndia, which also came up with a list of suggestions. When the state government pointed out this was a "religious matter", it got an earful from the bench, which said the issue pertained to children and the inspection should not be delayed on the pretext of "religious sensitivity". Four years on, the state continues to be clueless on the number of such facilities.

R Vidyasagar, former child protection specialist, Unicef, said the minimum standards required for a child care institution under the Juvenile Justice Act, 2015, should apply to these schools too. "Orphanages have been

रक्तदान कर एक लड़की के जीवन की रक्षा की। खबर सही है लेकिन इसे मजहब के साथ क्यों जोड़ा जाना चाहिए। यहां पर हिन्दू व मुसलमान के बीच भेद क्यों करना चाहिए। भारत एक हिन्दू बहुल देश है और यहां लाखों लोग हर दिन रक्तदान करते हैं।

यदि हम धर्म के आधार पर गिनती करेंगे, तब हिन्दुओं द्वारा किया जा रहा रक्तदान मुसलमानों की तुलना में काफी अधिक होगा, इसमें संदेह नहीं है। रक्तदान शिविरों से प्राप्त होने वाले रक्त का अधिकांश हिस्सा हिन्दुओं का है, लेकिन इससे अन्य मतावलंबी लोगों को भी लाभ मिलता होगा। लेकिन आप के समाचार पत्र में आज तक इस तरह की खबर प्रकाशित नहीं हुई है। इस साल फलां धर्म के लोगों ने इतना रक्तदान किया और ढमकाने धर्म के लोगों के जीवन की रक्षा की गई। आपने इस तरह की खबर को प्रथम पृष्ठ पर प्रमुखता से स्थान देकर निश्चित रूप से मुलसमानों को महानता की मूर्ति के रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास किया है, ऐसा मुझे लगता है। इस तरह के समाचार द्वारा हिन्दुओं के मन में हीनता का भाव भरने का प्रयास भी किया गया है।

यदि हम धर्म के आधार पर गिनती करेंगे, तब हिन्दुओं द्वारा किया जा रहा रक्तदान मुसलमानों की तुलना में काफी अधिक होगा, इसमें संदेह नहीं है। रक्तदान शिविरों से प्राप्त होने वाले रक्त का अधिकांश हिस्सा हिन्दुओं का है, लेकिन इससे अन्य मतावलंबी लोगों को भी लाभ मिलता होगा। लेकिन आप के समाचार पत्र में आज तक इस तरह की खबर प्रकाशित नहीं हुई है। इस साल फलां धर्म के लोगों ने इतना रक्तदान किया और ढमकाने धर्म के लोगों के जीवन की रक्षा की गई...

उत्कलमणि पंडित गोपबंधु दास द्वारा स्थापित किया अखबार समाज में आज जो यह खबर प्रकाशित की गई है, पंडित दास की आत्मा उससे निश्चित रूप से दु:खी हो रही होगी। अत: संपादक महोदय से मेरा अनुरोध है कि इस तरह की खबरों से बचकर समाज को जोड़ने में सहायक बनें।

इति
आपका
एक नियमित पाठक

पाठक ने यह पत्र सोशल मीडिया साइट फेसबुक में पोस्ट करने के साथ-साथ अखबार को भी भेजी होगी लेकिन अखबार में संपादक के नाम पत्र प्रकाशित नहीं हुआ।

तथाकथित मुख्यधारा की मीडिया के बारे में ओडिशा के एक पाठक की यह मन की पीड़ा थी, जिसे उन्होंने सोशल मीडिया में साझा किया, लेकिन समाचार पत्र ने इसे प्रकाशित नहीं किया। समाचार पत्रों में हिन्दुओं को नीचा दिखाने तथा अन्य संप्रदायों को महान दिखाने संबंधी खबरें प्रकाशित होती रही हैं। ये खबरें काफी शातिराना ढंग से इस तरह से प्रकाशित होती हैं, उससे प्रतीत होता है कि किसी सुनियोजित साजिश के तहत इसे अंजाम दिया जा रहा है।

यह सब केवल ओडिशा के किसी समाचार पत्र में हो रहा है, ऐसा भी नहीं है। अंग्रेजी के समाचार पत्रों में इस तरह की खबरों की भरमार है, लेकिन आम पाठक इस तरह की खबर के पीछे की हकीकत को जान नहीं पाता। हम यहां केस स्टडी के लिए कुछ ऐसी खबरों को ले रहे हैं, जिससे सेकुलरी मीडिया का शातिराना रुख काफी हद तक स्पष्ट हो जाता है। यहां अंग्रेजी समाचार पत्र 'द हिन्दू' की दो रिपोर्टों को ध्यान से देखिये। पहली खबर 24 जुलाई, 2018 की है जबकि दूसरी खबर 29 जुलाई, 2018 की है यानी महज पांच दिनों के अंतराल पर दो खबरें प्रकाशित हुईं। 24 जुलाई को प्रकाशित खबर

का शीर्षक है, गाजियाबाद में हिन्दू युवती से विवाह करने का प्रयास करने वाले मुसलमान युवक की हुई पिटाई। वहीं दूसरी खबर का शीर्षक है, मेंगलुरू में अन्य संप्रदाय की लड़की से बात करने वाले युवक की पिटाई।

पहली रिपोर्ट में द हिन्दू अखबार ने अपने शीर्षक में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि हिन्दू महिला से विवाह करने के प्रयास के कारण हिन्दुओं ने मुसलमान युवक पर हमला किया। यानी इस अखबार में बाकायदा हिन्दुओं को हमलावर के रूप में चित्रित किया गया है। वहीं समाचार पत्र की दूसरी रिपोर्ट में मुसलमान महिला से बातचीत करने के कारण मुसलमानों ने हिन्दू युवक पर हमला किये जाने वाली बात को शातिराना तरीके से छुपाया गया है। अर्थात हिन्दू ने यदि हमला किया तो उसे हमलावर लिखा जाएगा, लेकिन यदि मुसलमान ने हिन्दू पर हमला किया तो उसका उल्लेख करने के बजाय उसे छुपाने का प्रयास किया जाएगा। यह चल रही पत्रकारिता का एक उदाहरण मात्र है।

अब 23 जुलाई, 2018 को 'टाइम्स ऑफ इंडिया' की डिजिटल साइट पर प्रकाशित खबर पर नजर डालते हैं। इस खबर में कहा गया है कि महाराष्ट्र के बुलढाना जिले में एक गॉडमैन ने अप्राकृतिक यौन संबंध बनाने के लिए युवक को मजबूर किया।

इस खबर के साथ-साथ एक हिन्दू साधु का स्कैच भी लगाया गया है। इस खबर का शीर्षक पढ़ने व वहां पर हिन्दू साधु का स्कैच देखने के बाद किसी पाठक को लगेगा कि हिन्दू साधु की यह करतूत है। लेकिन जब हम खबर के अंदर जाते हैं तथा इसे पढ़ते हैं तो स्पष्ट होता है कि जिस गॉडमैन का खबर में उल्लेख किया गया है, उसका नाम आसिफ नूरी है और वह मुसलमान है।

समाचार लिखने वाले व उसे संपादित करने वाले व्यक्ति मौलवी लिख सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने जानबूझ कर गॉडमैन शब्द का शीर्षक में प्रयोग किया, ताकि यह किसी हिन्दू साधु की करतूत है, ऐसा एक

इन केस स्टडीज से स्पष्ट है कि जानबूझ कर सुनियोजित तरीके से मीडिया में हिन्दुओं को गलत चित्रित किया जा रहा है। यह किसी लंबी रणनीति का हिस्सा है, ऐसा प्रथमदृष्टया प्रतीत होता है। ऐसा नहीं है कि पहली बार इस तरह की खबरें प्रकाशित हो रही हैं। यह षड्यंत्र लंबे समय से चल रहा है लेकिन सोशल मीडिया का जमाना आने के बाद लोगों द्वारा इसका विरोध किया जा रहा है, तो सच्चाई सामने आ रही है...

संदेश जाए। केवल इतना ही नहीं, उसने जानबूझ कर इसके स्कैच के लिए हिन्दू साधु की फोटो का इस्तेमाल किया।

अब टाइम्स ऑफ इंडिया के चेन्नई संस्करण में एक खबर जो काफी प्रमुखता से प्रकाशित हुई है, उसका जिक्र करें। इस खबर का शीर्षक है कि मदरसा हो या फिर वेद पाठशाला सभी जगह बच्चों की तस्करी हो रही है, 11 साल के बच्चे को छुड़ाये जाने के बाद इसका खुलासा हुआ। इस समाचार को लिखने वाली महिला पत्रकार द्वारा दिये गये शीर्षक को पढ़ने के बाद कोई पाठक यदि पूरी खबर को पढ़ता, तो उसमें स्पष्ट होता है कि मदरसे में मानव तस्करी हो रही थी और 11 साल के बच्चे को छुड़ाये जाने के बाद इसका खुलासा हुआ है। किसी वेद पाठशाला से मानव तस्करी होने का जिक्र खबर में कहीं नहीं है। इस कारण यह स्पष्ट हो जाता है क्योंकि मदरसे से बच्चों की तस्करी होने का खुलासा हुआ है इसलिए वेद पाठशाला को भी इसमें जोड़ दिया जाए, ताकि यह दिखाया जा सके कि वेद पाठशालाओं में भी इस तरह के कार्य होते हैं। बिना कारण के वेद पाठशालाओं के प्रति लोगों में घृणा का भाव भरने का प्रयास किया गया है।

टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र में ही एक खबर प्रकाशित हुई है, जिसमें इस उल्लेख है कि एक स्वामी ने मां व बेटी के साथ दुष्कर्म किया। इस खबर में आरोपी मुसलमान है, लेकिन शीर्षक में स्वामी शब्द का जानबूझ कर प्रयोग किया गया है।

इन केस स्टडीज से स्पष्ट है कि जानबूझ कर सुनियोजित तरीके से मीडिया में हिन्दुओं को गलत चित्रित किया जा रहा है। यह किसी लंबी रणनीति का हिस्सा है, ऐसा प्रथमदृष्टया प्रतीत होता है। ऐसा नहीं है कि पहली बार इस तरह की खबरें प्रकाशित हो रही हैं। यह षड्यंत्र लंबे समय से चल रहा है लेकिन सोशल मीडिया का जमाना आने के बाद लोगों द्वारा इसका विरोध किया जा रहा है, तो सच्चाई सामने आ रही है।

यह एक भंयकर किस्म की पत्रकारिता है जो काफी दिनों से चल रही है। इस पत्रकारिता का लक्ष्य है हिन्दुओं को नीचा दिखाना तथा मुसलमान व अन्य संप्रदायों की गलतियों को छिपाकर या उस पर किसी तरह की लीपापोती करके उनकी अच्छी छवि प्रस्तुत करना। अब इस तरह की पत्रकारिता को क्या नाम दिया जाए यह शोध विषय है।

तब तक के लिए इसे सेकुलरी पत्रकारिता कहा जा सकता है। आशा करनी चाहिए कि आगामी दिनों में इस भयंकर किस्म की पत्रकारिता पर किसी विश्वविद्यालय में गंभीर शोध हो और इस पत्रकारिता का नामकरण व अन्य चीजें स्पष्ट हों।

—लेखक, ओडिशा से वरिष्ठ स्तंभकार हैं।

❐ त्रिवेणी प्रसाद तिवारी

...सा परा कला

जहां धर्म जीवन जीने का अनुशासन है, जिसमें कर्तव्य-अकर्तव्य का विशेष रूप है, वहीं अर्थ-साधन एवं साध्य की शुचि-अशुचि एवं भौतिक वस्तु व्यवहार है। काम गहरा सत्य है, सौंदर्य है, जो इच्छाएं जगाता है। ये इच्छाएं सुंदरता का, मन का वाहक बनती हैं जो कलाओं के रूप में प्रस्फुटित होती हैं...

जीवन का लक्ष्य क्या है? इस असार संसार में पाने योग्य क्या है? इसका उत्तर बिना संशय के भारतीय दर्शन और लोक चर्चा में व्याप्त है। वह है जीवन के चार पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ये चारों मानव जीवन के लिए मूल प्राप्ति बिंदु हैं, जिनमें संसार की समस्त कामनाएं अंतर्निहित हैं। जहां धर्म जीवन जीने का अनुशासन है, जिसमें कर्तव्य-अकर्तव्य का विशेष रूप है वहीं अर्थ साधन एवं साध्य की शुचि-अशुचि एवं भौतिक वस्तु व्यवहार है। काम गहरा सत्य है, सौंदर्य है, जो इच्छाएं जगाता है। ये इच्छाएं सुंदरता का, मन का वाहक बनती हैं, जो कलाओं के रूप में प्रस्फुटित होती हैं। कामनाओं की भांति कलाएं भी अगणित हैं परंतु जो स्वरूप हमें अधिकाधिक प्रभावित करता है, त्वरित आकर्षण पैदा करता है, उनमें संगीत, काव्य एवं दृश्य कलाएं (चित्र, मूर्ति, स्थापत्य आदि) अति महत्वपूर्ण हैं। ललित कलाओं में यूं तो संगीत एवं काव्य को अपनी अद्भुत संप्रेषणीयता के चलते विद्वानों ने शीर्ष माना है, लेकिन दृश्य कलाएं जो चाक्षुष विचलन पैदा करती हैं, उनका प्रभाव थोड़ा अलग और देखने में चामत्कारिक लगता है। इसलिए हम यहां कलाओं पर कुछ संवाद करेंगे। रही बात मोक्ष की तो पूरी कला की यात्रा ही आनंदोन्मुख है, अंततः मोक्ष ही परिणति है।

दृश्य कलाओं में चित्रकला, मूर्तिकला, मंदिर निर्माण एवं स्थापत्य कला आते हैं। भारतीय संस्कृति के पास कलाओं की अद्भुत धरोहर और कई-कई कालखंडों का व्यापक इतिहास है। चित्रकला में, अजंता के गुफा चित्र (औरंगाबाद), बाघ गुफा चित्र (मध्य प्रदेश), सित्तानवासल के गुफा चित्र (तमिलनाडु) संसार में अनूठे एवं विस्मयकारी हैं। मूर्तिकला के भव्य, अद्भुत कौशल युक्त एवं विशालता के उदाहरण पूरे देश में भरे पड़े हैं। ओडिशा के कोणार्क लिंगराज मंदिर, गुजरात का मार्तंड मंदिर हो या दक्षिण में महाबलीपुरम के रथ मंदिर, तंजावुर का शिव मंदिर देश के कोने-कोने में कलाओं का अनुपम, अहोमय विन्यास स्थित है। ऐलोरा के स्तंभ, हाथी की मूर्ति, कैलाश मंदिर विलक्षण कला इतिहास का परिचय देती हैं। खजुराहो का कंदरिया महादेव मंदिर और चारों ओर स्थित भव्य मंदिर समूह शिल्प के आश्चर्यजनक जीवंत संवाद हैं। समस्त भारतीय कला देवत्व की साधना है। भारतीय समाज धर्म के अनुपालन, विचार-विमर्श एवं शास्त्रार्थ से सत्य को साक्षात् करता

हुआ सदैव गतिशील रहा है। धर्म को सहज ग्राह्य बनाया कला ने। चित्र, मूर्ति और स्थापत्य के सूक्ष्म से लेकर विशाल सृजन ने धर्म द्वारा प्रतिपादित ब्रह्म, मोक्ष, परमानंद को जीवन रूपों में ढालकर मानव मन को कहीं अधिक सभ्य और भारतीय बनाया है।

कला का उद्देश्य व्यक्तिगत नहीं है। वह ब्रह्मानंद की प्राप्ति का मार्ग है। आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में जिस 'रस' की प्रतिष्ठा की है, कला द्वारा प्रतिफलित होती है। इसीलिए उस एक 'रस' को रूपायित करते-करते कला ने इतने रूप गढ़े हैं। भारतीय कला सृजन विलास के लिए नहीं है, चामत्कारिक वाह! के लिए चित्रकारी नहीं है, बल्कि ऋषियों की सी प्रज्ञा लिए कलाकार की साधना है, उस नेति-नेति को भी रूप में बांध लेने की।

भारतीय कला सृजन विलास के लिए नहीं है चमत्कारिक वाह के लिए चित्रकारी नहीं है बल्कि रिसीव किसी प्रज्ञा लिए कलाकार साधना है कलाकार की साधना है उसे उसे नेति नेति को भी रूप में बांध लेने की कला शब्द कि उस व्युत्पत्ति भी कला के तत्व की प्राप्ति का बोध कराती है...

कला शब्द की व्युत्पत्ति भी कला के परमत्व की प्राप्ति का बोध कराती है। कला शब्द की व्युत्पत्ति है 'कंलाति' अर्थात् आनन्द देने वाली। कला दिखाई देती है। यह नेत्रों की भाषा है। विशेषत: चित्र, मूर्ति शब्द रहित संवाद हैं। स्वरूप एवं मुद्राओं का विशिष्ट निरूपण सीधे-सीधे हृदय में भाव संचार करता है। विविध भंगिमाएं, रंगों की आभा एवं गढ़ने का हस्तलाघव और माध्यम की सतह स्वयं एक मूक संवाद पैदा करता है। कलाएं हमेशा संचारी भाव में होती हैं। उन पर दृष्टि पड़ते ही आपका मस्तिष्क विचार गतिमान हो जाता है। अंदर ही अंदर संवाद की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है और उस कलाकृति के सामने से हट जाने के बाद भी स्वरूपबोध आपके अवचेतन के कई स्तरों पर ध्वनित होता रहता है। यह ध्वनन प्रक्रिया जीवन सत्य के लिए हो इसलिए भारतीय कला निरूपण में रूप-भंगिमाओं, मुद्राओं का विशेष ध्यान दिया गया है। ये मुद्राएं एक तरह से मंत्रों, शब्दों का ही मूर्तिमान रूप हैं। जैसे अजंता में चित्रित अवलोकितेश्वर पद्मपाणि, भगवान बुद्ध की अभय मुद्रा की मूर्ति, एलिफेंटा स्थित भगवान शिव की 'त्रिमूर्ति' आदि। एलोरा के पत्थरों में उत्कीर्ण श्रावणानुग्रहश्ए श्गंगावतरणश् एवं खजुराहो की अगाध प्रेम बरसाती काम की सरल-सौष्ठव मर्ति। जीवन के असंख्य भावों को समेटे, देवताओं, नाग, यक्षों की परिकल्पनाओं को रूप में बांधते हुए, तमाम ज्योतिषीय नियमों को साधे हुए एक विशाल प्राकार खड़ा होता है और उस विशाल प्राकार के कई तल, मंडप से होता हुआ गर्भगृह में छोटा सा सबसे सरलतम रूप सृष्टि के आदि प्रतीक 'शिवलिंग' स्थापित है। यह क्या है? यह बाह्य से अंत: की यात्रा है। प्रकृति से सूक्ष्म की अनुभूति है। सचमुच! कलाएं उपनिषद के वाद-संवाद को स्वरूपों में रच देती हैं। वस्तुत: भारतीय कला धर्म का संवाद है। धर्म का उद्देश्य जीवन का उस ब्रह्म में लीन होना है। सत्-चित-आनंद हो जाना है। इसलिए कला धर्म के मूल का सहभागी बना। यथा,

विश्रान्तिर्यस्य सम्भोगे सा कला न कला मता।
लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला।।

अर्थात् जिसकी विश्रांति (परिणति) भोग में है, वह कलाए कला नहीं है बल्कि जिसका ध्येय, उद्देश्य या संकेत परमानंद परमत्व में लय (लीन) हो जाना है, वही श्रेष्ठ कला है, परा कला।

चित्र, मूर्ति व वास्तु निर्माण के शोधित नियमों, शास्त्रीय विधानों से सज्जित अनेक ग्रंथ हमारे पास मौजूद हैं। विष्णु धर्मोत्तर पुराण जो कि विष्णु पुराण का परिशिष्ट है। इसके तृतीय खंड में अध्याय 35 से 43 तक 'चित्रसूत्र' प्रकरण में मारकंडेय मुनि ने राजा वज्र की चित्रकला संबंधी समस्त जिज्ञासाओं का समाधान किया है। 'चित्रसूत्रकार' ने देवता, नाग, यक्ष, किन्नर, स्त्री, साधारण जन आदि सभी के चित्रण की शास्त्रीय नियमावली को लिखा है। उसमें रंग योजना, रस संप्रेषण एवं कला का महत्व वर्णित है। एक सूत्र है-

कलानां प्रवरं चित्रम् धर्मकामार्थ मोक्षदम्।
मगल्यं परम प्रथमं चेतदगृहे यत्र प्रतिष्ठितम्।।

कलाओं में चित्रकला श्रेष्ठ है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाली है। जिस घर में इसकी प्रतिष्ठा की जाती है, वहां मंगल होता है।

चित्रसूत्र के अलावा और भी ग्रंथ हैं जिनमें कला संबंधी विधान प्राप्त होते हैं। ये हैं-1 समरांगण सूत्रधार 2 मानसोल्लास 3 अपरिणित पृच्छा 4 शिल्प रत्न। गुप्तकाल के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री वाराहमिहिर द्वारा विरचित वृहद् संहिता यद्यपि खगोल विद्या संबंधी ग्रंथ है, फिर भी इसमें स्थापत्य विज्ञान वास्तु का भी प्रतिपादन हुआ है। 'कामसूत्र' में वात्सायन ने 64 कलाओं का वर्णन किया है। कामसूत्र में वर्णित कलाओं को अपने ग्रंथ 'जयमंगला टीका' में यशोधर पंडित ने एकसूत्र निबद्ध किया है जिसे भारतीय कला में 'षडंग' के नाम से जाना जाता है। यथा-

रूपभेदः प्रमाणानि भावलावण्य योजनम्।
सादृश्यं त्रवर्णिकाभंगः इति चित्र षडंगकम्।।

सादृश्य (समानता) वर्णिकाभंग (रंग एवं तूलिका प्रयोग) ये छह कला के षडंग हैं। ऐसा नहीं है कि भारतीय कला धर्म के नियमों में रूढ़ हो, केवल उपदेश रचती है। लोक जीवन भी शिल्पकारों के नेत्र संवाद से बच नहीं सका है। कोणार्क मंदिर के बाहरी निचले भाग में उत्कीर्ण मूर्तियां लोक जीवन में कार्य करते हुए लोगों की झांकी प्रस्तुत करती है। अजंता में जीवन के हर रंग बरस पड़े हैं।

जातक कथाओं के चित्रण में सामान्य जन का सुंदर अंकन है। यहां आपको पाश्चात्य प्रवृत्ति की भारी मांसल सौंदर्य एवं त्वचा की कारीगरी नहीं मिलेगी बल्कि बुढ़ापे के चित्र, रुग्णता एवं भाव रेखाओं में ही निबद्ध हैं, जो कि अद्भुत है। लोक प्रचलित कथाएं भी मिलेंगी। अमूर्तन भी है लेकिन वहां नहीं, सीधे लोग प्रांतर में उतरना पड़ेगा। 'डीह-डेहवार' व ग्राम के बाहर जो 'बरम बाबा' रक्षक देवता हैं। उनकी तिकोनी सी गोलाकार जमीन से ऊपर उठी हुई आकृति के बीच में छोटा दीपस्थान (आला) बना हुआ है। यह क्या है? 'जिउतिया' माई के लिए सपाट लिपी-पुती जमीन पर अनगढ़ सा पत्थर जिस पर सिंदूर लगा हुआ है। कैसा है यह अद्भुत ज्यामितीय रूप? यह किसी आधुनिक अमूर्तन कला से कम है? लोक में, कम से कम स्वरूपों में सामूहिक आस्था है, जिससे कामना की जाती है। संवाद होता है प्रार्थना रूप में। यह कला रूप तथाकथित उत्तर आधुनिक के कालाभ्यास के आस्थाहीन वस्तु रूप संधान से तो कहीं अच्छा है। सृष्टि के संपूर्ण वैभव में कला का निवास है। हमारे ऋषियों ने उस परमात्म तत्व का साक्षात्कार किया। उसके बाद वे कुछ कह न सकेए मौन हो गएए मात्र मुस्कुरा दिए। वही मंदस्मित मुस्कान देव मूर्ति में मिल जाएगी। सृष्टा का रूप लास्य ही तो प्रकृति है। ध्यान द्वारा ईश्वर से संवाद हो सकता है परंतु सभी मानव मात्र को यह उच्च स्तर उपलब्ध नहीं हो सकता। इसीलिए कलाकारों ने उस सृष्टा के स्पंदन को, उसकी बनाई प्रकृति के ही सदृश रंगों-रेखाओं और पत्थरों के माध्यम से उकेरने की साधना की है। सच्चे अर्थों में भारतीय कला ईश्वरत्व और मानव के बीच रूपमय संवाद सेतु है। जिसे किसी ने 'सो वै सः' कहा, आचार्य अभिनवगुप्त ने ध्वनि कहा, नादमय कहा। उसी अगम्य को, उसके ही बनाए रूपों के समक्ष पुनर्सृजन कर कला ने चिरंतन को ही रचा है। यह अविरल है। उस अनंत की तरह रूपांकन भी अनंत।

-लेखक, भारतीय कला-दर्शन के अध्येता और पॉटरी और सेरेमिक में अपने कृति-संग्रह 'बीजक' के लिए चर्चित हैं।

राष्ट्रवादी पत्रकारिता की विचार-वीथी

दीनदयाल उपाध्याय

❑ चन्दन आनन्द

सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय प्रत्येक सजग व्यक्ति अपने विचारों को ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच पहुंचाने में प्रयासरत रहता है। विचारों को आम जनमानस तक पहुंचाने के लिए एक सशक्त माध्यम की आवश्यकता रहती है और समाचार पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग हर सजग विचारक अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए करता है। भारतीय इतिहास में जितने समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी एवं अन्य विचारक हुए, उन्होंने पत्रकारिता का उपयोग हथियार के रूप में किया। इसी कड़ी में एक नाम भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे दीनदयाल उपाध्याय का भी है। दीनदयाल उपाध्याय एक विचारक, कुशल संगठक के साथ-साथ एक अच्छे पत्रकार भी थे। उनकी पत्रकारिता किसी निजी स्वार्थ की अपेक्षा विशुद्ध मानवता और राष्ट्र चिंतन पर आधारित थी। 25 सितम्बर, 1916 को दीनदयाल उपाध्याय का जन्म हुआ। बाल्यकाल में ही वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए और बाद में इसके प्रचारक भी रहे।

एकात्म मानवदर्शन के रूप में उन्होंने एक व्यावहरिक चिंतन देश और दुनिया को दिया। यह चिंतन एवं विचार इसलिए भी उपयोगी है, क्योंकि साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों ही विचार विश्व पटल पर अव्यावहारिक साबित हो चुके थे और दोनों से ही कोई सकारात्मक निष्कर्ष निकल के सामने नहीं आए। एकात्म मानवदर्शन ने एक ऐसा वैचारिक-आर्थिक विकल्प न केवल भारत, अपितु विश्व को दिया जिसमें किसी भी श्रेणी के संघर्षरत रहने की आवश्यकता नहीं थी।

भारतीय इतिहास में जितने समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी एवं अन्य विचारक हुए, उन्होंने पत्रकारिता का उपयोग हथियार के रूप में किया। इसी कड़ी में एक नाम भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे दीनदयाल उपाध्याय का भी है। दीनदयाल उपाध्याय एक विचारक, कुशल संगठक के साथ-साथ एक अच्छे पत्रकार भी थे। उनकी पत्रकारिता किसी निजी स्वार्थ की अपेक्षा विशुद्ध मानवता और राष्ट्र चिंतन पर आधारित थी...

विशुद्ध मानवता एवं और जनकल्याण पर निर्मित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन भारतीयता से जुड़े प्रश्नों का वास्तविक उत्तर था। इसी भारतीय विचार को केन्द्र में रखकर दीनदयाल उपाध्याय पत्रकारिता के क्षेत्र में भी प्रभावी साबित हुए। 1963 में दीनदयाल उपाध्याय ने लंदन में विपक्ष के नेता के तौर पर अपना उद्बोधन दिया। इस उद्बोधन के बाद अगले दिन वहां के प्रतिष्ठित समाचार पत्र दि गार्जियन ने लिखा कि दीनदयाल उपाध्याय वह व्यक्ति हैं, जिन पर भारत को विशेष ध्यान देना होगा। इसके दो वर्ष बाद ही 1965 में दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानवदर्शन का विचार विश्व को दिया और जनकल्याण के साथ-साथ राष्ट्र कल्याण की राह दिखाई। दीनदयाल उपाध्याय कर्मयोगी थे और राजनीति में रहकर भी वह उससे निर्लिप्त रहे।

राजनीतिक लिप्सा के आकांक्षी लोगों के लिए उन्होंने लिखा, 'शिखर पर बैठने की इच्छा सबकी होती है, मगर मंदिर के शिखर पर तो कौए भी बैठते हैं। हमें तो उस नींव के पत्थर बनने की आकांक्षा रखनी चाहिए, जिस पर भव्य मंदिर टिका होता है।' राजनीति में भी वह अपनी इच्छा के विरुद्ध केवल जन सेवा और राष्ट्रसेवा के लिए आए थे। दत्तोपंत ठेंगड़ी एक जगह लिखते हैं, 'जनसंघ का अध्यक्ष बनने के लिए उनसे दो बार आग्रह किया गया, लेकिन उन्होंने इसे ठुकरा दिया।'

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी दीनदयाल उपाध्याय ने अपने विचार और चरित्र की अमिट छाप छोड़ी। वह हमेशा मूल्य आधारित और स्वच्छ पत्रकारिता के पक्षधर थे। उनके पत्रकारीय जीवन का प्रारंभ 1947 से ही होता है। दीनदयाल उपाध्याय के प्रयासों और प्रेरणा से ही 1947 में मासिक 'राष्ट्रधर्म' और 1948 में साप्ताहिक 'पांचजन्य' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके बाद 'स्वदेश' दैनिक भी चला। इन पत्रिकाओं में दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका स्पष्ट करते

हुए डा. महेशचन्द्र शर्मा अपनी पुस्तक में कहते हैं कि दीनदयाल उपाध्याय इन पत्रिकाओं के प्रत्यक्ष संपादक कभी नहीं रहे, लेकिन वास्तविक संचालक, संपादक व आवश्यकता होने पर उसके 'कम्पोजिटर', 'मशीनमैन' व सब कुछ दीनदयाल उपाध्याय ही थे। उनके द्वारा संचालित पांचजन्य साप्ताहिक और राष्ट्रधर्म मासिक अभी तक चल रहे हैं। राष्ट्रधर्म के वह संस्थापक प्रबंधक रहे और पांचजन्य के मार्गदर्शक और संचालक रहे। इन पत्रिकाओं में दीनदयाल उपाध्याय निरंतर लिखते थे और अपने विचारों को लिपिबद्ध कर जनता तक पहुंचाने के लिए उन्होंने इन पत्रिकाओं का ठीक उपयोग किया।

पत्रकारीय मूल्यों और पत्रकारिता में सभ्य भाषा के उपयोग को लेकर भी वह सजग थे। इसी संदर्भ में एक बार जब पांचजन्य ने संत फतेह सिंह के आमरण अनशन पर बैठने की खबर का शीर्षक दिया 'अकाल तख्त के काल', तब दीनदयाल उपाध्याय ने इस शीर्षक को हटवाया और समझाया कि सार्वजनिक जीवन में इस प्रकार की भाषा का उपयोग नहीं करना चाहिए, जिससे कटुता बढ़े और एक साथ काम करने अथवा संवाद के रास्ते ही बंद हो जाएं। दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि अपनी बात को दृढ़ता से कहने का अर्थ कटुतापूर्ण कहना नहीं होना चाहिए। वहीं एक बार पांचजन्य के संपादकीय में आलोचना के लिए 'मूर्खतापूर्ण' शब्द के प्रयोग को वह नकारते हैं। अपनी समीक्षा में दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि यदि इसकी जगह किसी सौम्य शब्द का प्रयोग किया जाता तो वह पांचजन्य की प्रतिष्ठा के अनुरूप होता। उनका मानना था कि पत्रकारिता में शिष्टाचार की अवहेलना नहीं होनी चाहिए।

दीनदयाल उपाध्याय के पास समाचारों का न्यायवादी दृष्टिकोण था। वह समाचार लेखन और प्रकाशन को लेकर बड़े सजग रहते थे। वह पत्रिका संचालन की छोटी-छोटी बातों पर चर्चा करते थे। पांचजन्य और राष्ट्रधर्म के कार्यालयों में जाकर वह कई घंटे पत्रकारिता पर चर्चा करते थे। समाचार कैसे बनाना चाहिए, शीर्षक कैसा होना चाहिए जैसी अनेक छोटी-बड़ी बातों में उनका दृष्टिकोण बड़ा व्यावहारिक था। उनके अनुसार पत्रकारिता मनुष्यता, धर्म और देश पर आधारित होनी चाहिए। पत्रकारिता में किसी भी ऐसी विषयवस्तु को नहीं लिखना या दर्शाना चाहिए, जिसका कोई औचित्य न हो और जो आम जनमानस को आहत करे। ऐसे ही एक बार जब हरियाणा, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल की गैर-कांग्रेसी सरकारों को तीन दिन के अंदर ही गिरा दिया गया, तब ऑर्गेनाइजर ने व्यंग्यचित्र छापा जिसमें कांग्रेस के नेता लोकतंत्र के बैल को काटते हुए दर्शाए गए थे। इस कार्टून से दीनदयान उपाध्याय बहुत आहत हुए। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि 'चाहे व्यंग्यचित्र में ही क्यों न हो, गौहत्या का यह दृश्य मन को धक्का पहुंचाने वाला है।'

पत्रकारीय मूल्यों और पत्रकारिता में सभ्य भाषा के उपयोग को लेकर भी वह सजग थे। इसी संदर्भ में एक बार जब पांचजन्य ने संत फतेह सिंह के आमरण अनशन पर बैठने की खबर का शीर्षक दिया 'अकाल तख्त के काल', तब दीनदयाल उपाध्याय ने इस शीर्षक को हटवाया और समझाया कि सार्वजनिक जीवन में इस प्रकार की भाषा का उपयोग नहीं करना चाहिए, जिससे कटुता बढ़े और एक साथ काम करने अथवा संवाद के रास्ते ही बंद हो जाएं...

दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में राष्ट्रवादी पत्रकारिता रची-बसी थी। उन्होंने लगभग 20 वर्षों तक इन पत्रिकाओं में निरंतर लिखा। पत्रकारिता का उपयोग उन्होंने वास्तव में एक हथियार के रूप के किया। वह 'ऑर्गेनाइजर' में 'पॉलिटिकल डायरी' और 'पांचजन्य' में 'विचार-वीथि' नाम से कई वर्षों तक स्थायी स्तंभ लिखते रहे। उन्होंने चेतना प्रसार के लिए पत्रकारिता का उपयोग किया और अपने यर्थाथवादी व्यवहार और दृष्टिकोण से कई लोगों को पत्रकारिता के क्षेत्र में तैयार भी किया। उनके उस काल में चिंतन को जानने का स्रोत भी यही पत्रिकाएं थीं।

दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी राजनीतिक लड़ाई में भी पत्रकारिता का ठीक उपयोग किया। जब एक बार नेहरू द्वारा जम्मू-कश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है, उसे अंतर्राष्ट्रीय सीमा मान संघर्षविराम की बात की गई, तो दीनदयाल उपाध्याय ने इसकी कड़ी आलोचना की। दीनदयाल उपाध्याय ने लिखा कि देश के प्रधानमंत्री द्वारा किए गए इस रहस्योद्घाटन के कारण कि उन्होंने एक बार युद्धविराम रेखा पर राज्य का विभाजन स्वीकार करने का प्रस्ताव पाकिस्तान से किया था, तीव्र वेदना हुई। उक्त प्रस्ताव न केवल देशभक्ति-शून्य है, वरन कूटनीति के भी विरुद्ध है।

दीनदयाल उपाध्याय की पत्रकारिता राष्ट्र कल्याण के साथ सर्वे भवन्तु सुखिन: को परिलक्षित करने वाली थी, जिसमें देश, धर्म और समाज को ध्यान में रखकर प्रमुखता से अपनी बात रखने का साहस था। आज दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को लेकर पूरी दुनिया में नए सिरे से उत्सुकता बढ़ रही है। यह उनके पत्रकारिता से लगाव का ही प्रतिफल है कि हम उनका नए सिरे से आकलन कर पाने में सफल हो रहे हैं क्योंकि उनके विचारों का अधिकांश हिस्सा लेखों के रूप में पत्रकारिता ने ही संरक्षित करके रखा है।

स्वप्नों के पन्ने
दुरभिसंधियों का दस्तावेज

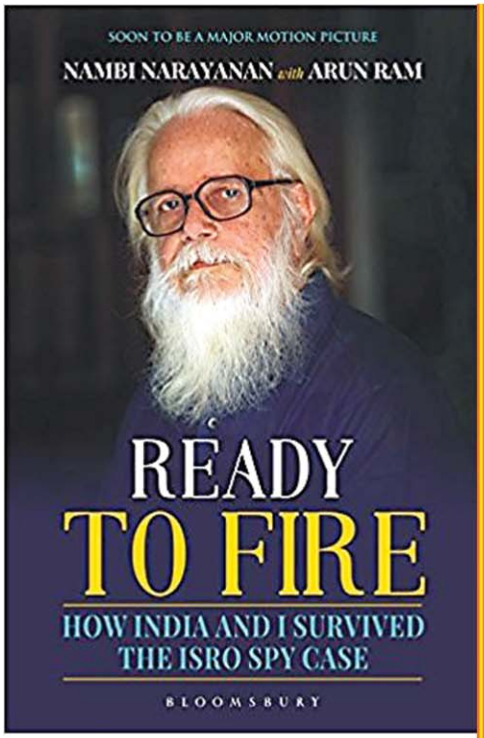

यह पुस्तक होमी जहांगीर भाभा और विक्रम साराभाई जैसे स्वप्नदर्शी वैज्ञानिकों की रहस्यमयी स्थितियों में मौत के बीच एक ऐसे ठोस दस्तावेज के रूप में हमारे सामने आती है, जो सलीके से इस बात को बयां करने में समर्थ है कि भारतीय वैज्ञानिक लम्बे समय से आंतरिक राजनीति और अंतराष्ट्रीय षड्यंत्रों के निशाने पर रहे हैं। वैज्ञानिकों के खिलाफ साजिश रचने की बातें आजादी के बाद से होती रही हैं, लेकिन आशंकाएं कभी दस्तावेज के रूप नहीं ले सकीं...

'रेडी टू फायर' पढ़ते समय आपका मन उन जज्बों को सलाम किए बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने भारत में अंतरिक्ष विज्ञान की नींव रखी। एक बार दिमाग में यह प्रश्न उठता ही है कि वे कैसे युवा थे, जिन्होंने आज से सात-आठ दशक पहले विदेशों में ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के बाद, तमाम प्रलोभनों और सुविधाओं को दरकिनार करते हुए, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दुरभिसंधियों के बीच, देश को विज्ञान के जगत में सिरमौर बनाने का स्वप्न देखा।

यह पुस्तक होमी जहांगीर भाभा और विक्रम साराभाई जैसे स्वप्नदर्शी वैज्ञानिकों की रहस्यमयी स्थितियों में मौत के बीच एक ऐसे ठोस दस्तावेज के रूप में हमारे सामने आती है, जो सलीके से इस बात को बयां करने में समर्थ है कि भारतीय वैज्ञानिक लम्बे समय से आंतरिक राजनीति और अंतराष्ट्रीय षड्यंत्रों के निशाने पर रहे हैं। वैज्ञानिकों के खिलाफ साजिश रचने की बातें आजादी के बाद से होती रही हैं, लेकिन आशंकाएं कभी दस्तावेज के रूप नहीं ले सकीं। 'रेडी टू फायर' इस कमी को दूर करती है, यह बताती है कि नागरिकों की आशंकाएं निराधार नहीं थीं।

एस. नम्बी नारायण की यह किताब इतने सलीके से लिखी गई है कि इसमें उनकी व्यक्तिगत कहानी देश की वैज्ञानिक-बिरादरी की कहानी बन जाती है। इसका कुछ श्रेय किताब के सहलेखक अरुण राम को भी दिया जाना चाहिए। पेशे से पत्रकार अरुण राम नम्बी की गिरफ्तारी के समय से इस मसले को कवर करते रहे हैं, इसलिए इससे जुड़े हर पड़ाव को करीने के साथ उकेर पाए।

मेकेनिकल इंजीनियर नम्बी प्रिंसटन यूनिवर्सिटी से केमिकल रॉकेट प्रपल्शन में मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद 1966 में इसरो से जुड़े। उनकी गिनती भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान को आकार देने वाले अग्रणी वैज्ञानिकों में की जाती है। उन्होंने इसरो को 1966 में टेक्निकल असिस्टेंट-डिजाइन के रूप में ज्वाइन किया था। वह एसएलवी के दूसरे और चौथे चरण के परियोजना निदेशक रहे। आगे चलकर वह क्रायोजनिक प्रपल्शन सिस्टम के पहले परियोजना निदेशक बने।

1994 में एक दिन केरल पुलिस ने उन्हें मालदीव की दो लड़कियों मरियम रशीदा और फौजिया हसन के झूठे बयानों के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। उन पर दुश्मन देश की खुफिया एजेंसी को भारतीय अंतरिक्ष तकनीक बेचने का आरोप लगा। 51 दिन जेल में रहने और तमाम यातनाओं को सहने के बाद उन्हें जमानत मिली। किताब की प्रस्तावना में ही इस गिरफ्तारी का उन पर और देश पर क्या प्रभाव पड़ा, इसका मार्मिक विवरण मिलता है-

When the Kerala police came knocking at my door in Thiruvananthapuram, that dream was threatened. I was to be branded a spy who sold rocket engine secrets to Pakistan through women spies from the Maldives - a conspiracy that would be eventually defeated, but not before dampening India's

space dreams and virtually demolishing my life.

नम्बी की गिरफ्तारी से पूरा देश सकते में आ गया। देश में पहली बार वैज्ञानिकों को शक की नजर से देखा गया। प्रश्नचिन्ह नम्बी पर नहीं, पूरी वैज्ञानिक बिरादरी पर लगा था और इसका प्रभाव भी देश के इस शीर्ष वैज्ञानिक के साथ भारत के सभी वैज्ञानिकों के मनोबल पर भी पड़ना निश्चित था। शुरुआत में पुलिस और आईबी ने पुख्ता सुबूत होने की बात कही लेकिन जैसे ही यह केस सीबीआई को सौंपा गया, षड्यंत्र की परतें खुलने लगीं। सीबीआई ने 1996 में उन पर लगाए गए आरोपों को निराधार पाया और सुप्रीम कोर्ट ने 1998 में उन्हें दोषमुक्त करार दिया। नम्बी ने आगे की लड़ाई अपने खोए हुए सम्मान के लिए लड़ी। नम्बी एक साक्षात्कार में इस लड़ाई को अपने परिवार के लिए लड़ी गई लड़ाई बताते हैं-

" There were times when I did not even want to live, because how would you fight a case that was fabricated but still being propelled. My children sensed my thoughts then. They told me if I die, they will forever be known as children of a spy. They told me I was the only person who can prevent such a disgrace on my family. It was then that living to fight this became a necessity for me,"

इस लड़ाई में अंततः उन्हें विजय मिली। हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने उन्हें 50 लाख रुपए मुआवजा देने और दोषी अधिकारियों के खिलाफ एक जांच समिति बनाने का आदेश सुनाया है।

वैसे तो नम्बी की गिरफ्तारी की टाइमिंग ने ही किसी षड्यंत्र की आशंका पैदा कर दी थी। उस समय अमेरिका क्रायोजनिक इंजन भारत

शुरुआत में पुलिस और आईबी ने पुख्ता सुबूत होने की बात कही लेकिन जैसे ही यह केस सीबीआई को सौंपा गया, षड्यंत्र की परतें खुलने लगीं। सीबीआई ने 1996 में उन पर लगाए गए आरोपों को निराधार पाया और सुप्रीम कोर्ट ने 1998 में उन्हें दोषमुक्त करार दिया। नम्बी ने आगे की लड़ाई अपने खोए हुए सम्मान के लिए लड़ी...

को देने के लिए तैयार नहीं था और रूस पर भी दबाव बनाए हुए था कि वह क्रायोजनिक इंजन की टेक्नोलॉजी भारत को न दे।

इन दबावों को दरकिनार करते हुए भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा खुद ही क्रायोजनिक इंजन बनाने का प्रयास उस समय की किसी भी विश्वशक्ति को बिल्कुल पसंद नहीं आया था, लेकिन केरल पुलिस ने जिस अंदाज में ऐसा दावा करना शुरू किया कि उसने एक देशविरोधी नेक्सस का पर्दाफाश किया है, उस समय बचाव में टाइमिंग का दलील को लचर पड़ना ही था। केरल की राजनीति में इस प्रकरण को लेकर उठापटक शुरू हो गई और मलयालम मीडिया ने नम्बी को अपनी तरफ से लगभग दोषी साबित कर ही दिया।

नम्बी की गिरफ्तारी के प्रकरण में उस समय के पुलिस अधिकारी आर.बी.श्रीकुमार की भूमिका पर कई सवाल उठे। ये वही श्रीकुमार हैं, जो बाद में गुजरात सरकार में पुलिस महानिदेशक बने और गोधरा कांड के बाद पुलिस की कार्रवाई पर सवाल खड़े करने वाला शपथपत्र देकर विवादों में आए। लेकिन अंततः नम्बी जीते, देशभक्ति जीती, देश जीता। सुखद यह है कि किताब इस जीत का श्रेय भी वैज्ञानिक-नेतृत्व और उनके द्वारा अपने सहयोगियों में भरे गए जज्बे को देती है-

But India's space ambitions, fuelled by such greats as Vikram Sarabhai and Satish Dhawan, would overcome the agnipariksha, as time proved. Curiously enough, it took another eighteen years for me to prove my innocence - and for others to accept that the sordid drama of the ISRO spy case was but a fallout of a reckless police sub inspector's misadventure with a Maldivian woman; a drama that a foreign agency was only too eager to prolong and propel, penetrating into such agencies as the Indian Intelligence Bureau, and taking some of its officials as pawns, to scuttle India's inevitable march to space. This is the story of that conspiracy against my country. This is my story.

यह देश के लिए बड़ा सोचने वाले युवाओं, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और सजग नागरिकों को देश विरोधी राजनीति और प्रशासन से परिचित होने और अपने स्वप्न में निरंतर विश्वास को बनाए रखने के लिए जरूर पढ़नी चाहिए।

किताब का नाम- रेडी टू फायर-हाउ इंडिया एंड आइ सरवाइव्ड द इसरो स्पाइ केस।
लेखक- नम्बी नारायणन और अरुण राम
प्रकाशक -ब्लूम्सबरी इंडिया
मूल्य-599

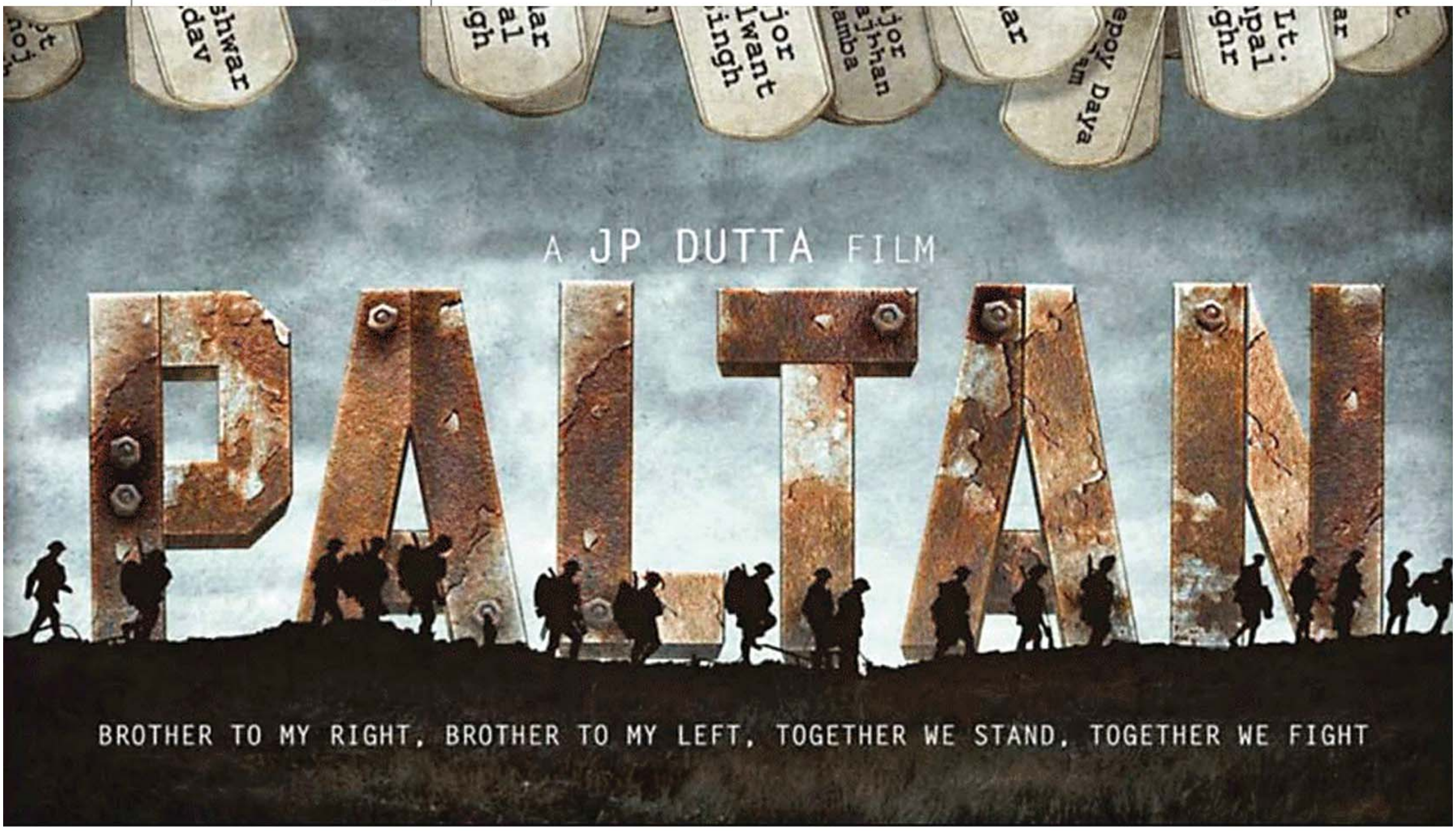

भारतीय सेना की 1967 की उसी शौर्यगाथा को लोगों के जेहन में फिर से जिंदा करने के लिए बॉलीवुड निर्देशक जेपी दत्ता ने फिल्म 'पलटन' बनाई है। खास बात यह है कि जेपी दत्ता इससे पहले 1971 के भारत-पाक युद्ध पर 'बॉर्डर' और 1999 के कारगिल युद्ध पर 'एलओसी' जैसी फिल्में भी बना चुके हैं...

❐ दीपक कुमार

फिल्म का नाम: पलटन
डायरेक्टर: जेपी दत्ता
स्टारकास्ट: अर्जुन रामपाल, जैकी श्रॉफ, सोनल चौहान, दीपिका कक्कड़, सोनू सूद, ईशा गुप्ता, गुरमीत चौधरी, लव सिन्हा, सिद्धांत कपूर
रेटिंग: 4 स्टार
पलटन : एक ऐतिहासिक भिड़ंत की कहानी

आपको याद होगा कि बीते साल ही भारत-भूटान की सीमा से लगे डोकलाम में सड़क बनाने की कोशिश में जुटी दुनिया की सबसे ताकतवर चीन की आर्मी से भारतीय जवान भिड़ गए और 72 दिनों तक उसे अपनी सीमा में रहने को मजबूर कर दिया। ऐसा पहली बार नहीं है कि जब चीन के खिलाफ भारतीय सेना ने अपने शौर्य का परिचय दिया हो। इससे पहले साल 1967 में भी भारतीय सेना के जवानों ने सीमित संसाधनों और पुराने हथियारों से चीन के हजारों सैनिकों का डटकर मुकाबला किया था। भारतीय सेना की 1967 की उसी शौर्यगाथा को लोगों के जेहन में फिर से जिंदा करने के लिए बॉलीवुड निर्देशक जेपी दत्ता ने फिल्म 'पलटन' बनाई है। खास बात यह है कि जेपी दत्ता इससे पहले 1971 के भारत-पाक युद्ध पर 'बॉर्डर' और 1999 के कारगिल युद्ध पर 'एलओसी' जैसी फिल्में भी बना चुके हैं।

क्या है कहानी

फिल्म की कहानी उस वास्तविक घटना को बयां करती है जिसमें भारतीय जवानों ने चीन के अहंकार को एक ही झटके में तोड़ दिया। दरअसल, 1962 के युद्ध से अति-आत्मविश्वास में डूबी चीन की सेना 1967 में एक बार फिर भारतीय जवानों से भिड़ने के लिए सीमा पर आ गई। तब भारतीय जवान 'नाथु ला से सेबु ला' तक फेंसिंग यानी सीमा को डिमार्केट करने के लिए तार की बाड़ लगा रहे थे। यह बात चीन को नागवारा गुजरी और उसने भारतीय सेना पर

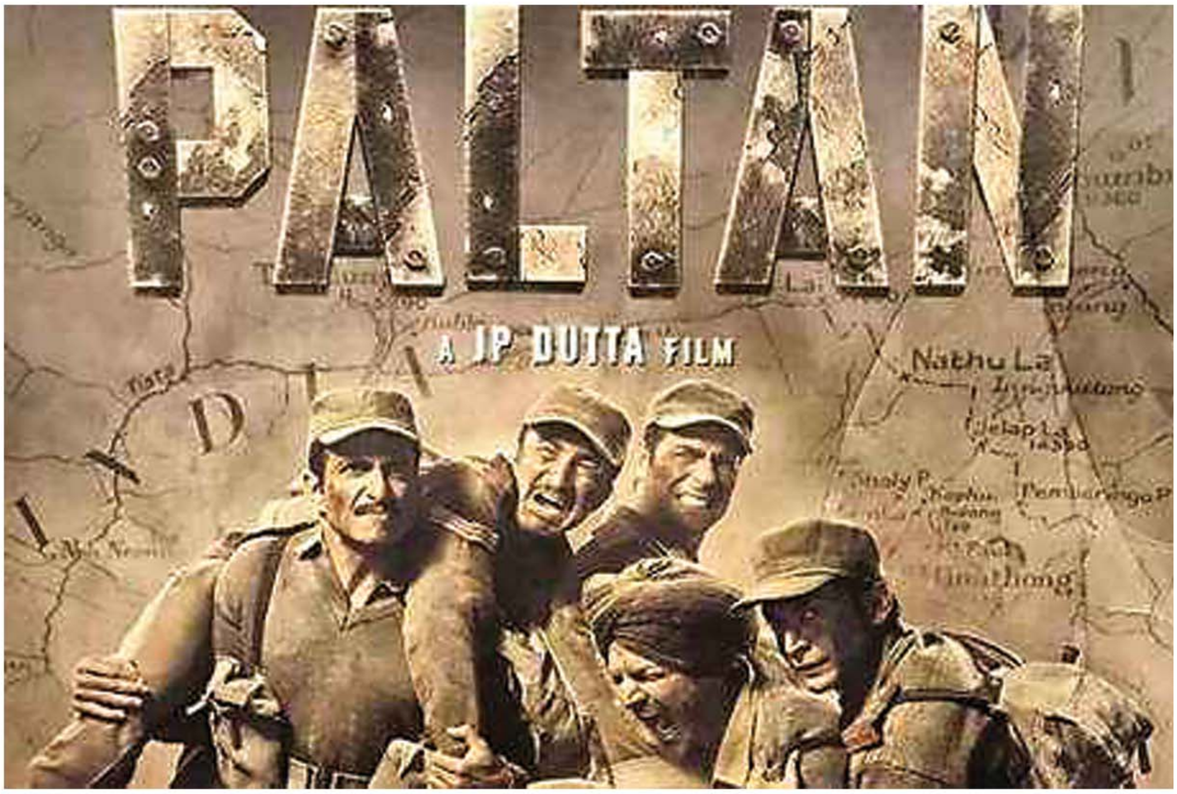

हमला बोल दिया। लेकिन इस बार भारतीय सेना सतर्क थी। भारत के जवानों को इस बात का अंदाजा था कि चीनी सैनिक कोई खुराफात करेंगे। यह जोरदार मिलिट्री क्लैश करीब पांच दिनों तक चली। बाद में चीनी फौज ने घुटने टेकते हुए सीजफायर की मांग कर दी।

किसकी क्या भूमिका

इस संघर्ष में भारतीय जीत के नायक मेजर जनरल सगत सिंह थे। फिल्म में उनकी भूमिका जैकी श्रॉफ ने निभाई है, जो कुछ ही दृश्यों में नजर आते हैं और याद रह जाते हैं। सगत सिंह के कहने पर लेफ्टिनेंट कर्नल राय (अर्जुन रामपाल) के अंडर में मेजर हरभजन सिंह (हर्षवर्धन राणे), लेफ्टिनेंट अत्तर (लव सिंन्हा), कैप्टन पृथ्वी डागर (गुरमीत चौधरी), मेजर बिशन सिंह (सोनू सूद) और हवलदार पराशर (सिद्धांत कपूर) सीमा की सुरक्षा करने में लग जाते हैं। नाथु ला पोस्ट की सुरक्षा का काम बिशन को दिया जाता है। सीमा पर फेंसिंग के दौरान भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच, जुबानी जंग से लेकर पत्थरों और मशीनगन तक का इस्तेमाल होता है। इस बीच कहानी फ्लैशबैक में भी जाती है और सभी अपने-अपने परिवार को याद करते हैं।

फिल्म की शूटिंग रियल लोकेशन पर हुई है और सेना के हथियारों और यूनिफॉर्म को देखकर ऐसा लगता है कि यह 1967 के समय की कहानी है। ओवरऑल फिल्म आपको बोर नहीं करेगी...

फिल्म क्यों देखें

अकसर आप मीडिया में भारतीय जवानों की वीरता पर सवाल उठाने वाले लोगों की बातें सुनते हैं लेकिन आपको सच में जवानों की वीरता देखनी हो तो इस फिल्म को जरूर देखें। वॉर फिल्मों के सबसे एक्साइटेड मौके वो होते हैं जब जंग छिड़ती है। यह एक्साइटमेंट इस फिल्म में जेपी दत्ता ने बखूबी दिखाई है। कई ऐसे मौके आएंगे जब आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। फिल्म का ट्रीटमेंट और सिनेमैटोग्राफी अच्छी है। सबसे अच्छी बात यह है कि सच को सच के करीब रहकर ही दिखाया गया है।

किसकी कैसी एक्टिंग

अर्जुन रामपाल, सोनू सूद, गुरमीत चौधरी, जैकी श्रॉफ का काम बढ़िया है। वहीं लव सिन्हा और बाकी किरदारों का काम सहज है। सोनू निगम का गाया हुआ गीत इमोशन भरता है। कहीं-कहीं आंखें नम भी हो जाती हैं।

कहां हुई चूक

फिल्म की कमजोर कड़ी इंटरवल से पहले का हिस्सा है। यह भूमिका बनाने के चक्कर में काफी लंबा हो जाता है। दर्शकों को फिल्म देखकर पहले ही पता चल जाता है कि आगे क्या होने वाला है। वहीं चीनी सैनिकों के डायलॉग थोड़े बनावटी और फनी भी लगेंगे। फिल्म देखकर आप जेपी दत्ता की 1997 की 'बॉर्डर' को जरूर याद करेंगे। फिल्म 'बॉर्डर' की तरह ही सैनिकों का फ्लैशबैक में जाना और परिवार वालों से इमोशनल बिछड़न देखने को मिलेगा।

अच्छी बात

फिल्म की शूटिंग रियल लोकेशन पर हुई है और सेना के हथियारों और यूनिफॉर्म को देखकर ऐसा लगता है कि यह 1967 के समय की कहानी है। ओवरऑल फिल्म आपको बोर नहीं करेगी। फिल्म में अच्छा एक्शन दिखाया गया है और फिल्म के अंत में जेपी दत्ता अपने सभी मसालों के साथ भारतीय सेना की जीत दिखाने में कामयाब होते हैं।

— लेखक युवा फिल्म समीक्षक हैं

❒ रविंद्र सिंह भड़वाल

हैशटैग

सोशल साइट्स की दुनिया में बरती जाने वाली शब्दावली में जो शब्द या सिंबल अपनी एक खास पहचान बना चुके हैं, निर्विवाद रूप से हैशटैग भी उनमें से एक है। सोशल मीडिया में ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम और गूगल प्लस का इस्तेमाल करने वालों में हैशटैग एक लोकप्रिय और बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाने वाला सिंबल बन चुका है।

अपनी पोस्ट को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने और अधिक लाइक पाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। लेकिन अब भी बहुत से लोग ऐसे हैं कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं होगी कि आखिर ये हैशटैग है क्या बला या इसे क्यों लगाया जाता है और इसका अधिकतम लाभ कैसे लिया जा सकता है। हैशटैग एक ऐसा शब्द या वाक्यांश होता है, जिसके तुरंत पहले # चिह्न लगा होता है। ट्विटर से लेकर फेसबुक पर # चिन्ह सामान्य रूप से देखने को मिल जाता है। यह दिए गए शब्द को लिंक में परिवर्तित करने का कार्य करता है। आज यह डिजिटल सिंबल अब इतना आम हो चुका है कि इसके महत्व को जानने वाला कोई भी व्यक्ति सोशल साइट पर अपनी पोस्ट या फोटो साझा करते वक्त इसे लगाना नहीं भूलता है।

सोशल वर्ल्ड में हैशटैग आज की तारीख में कितना लोकप्रिय और उपयोगी बन चुका है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि हर रोज दुनिया में करीब 15 करोड़ हैशटैग इस्तेमाल किये जाते हैं। हैशटैग एक तरह का मेटा टैग होता है, जो किसी कंटेंट को स्पेसिफाई या डीनोट करता है। सोशल मीडिया की विशाल दुनिया में हैशटैग लगाने से अलग-अलग कैटेगरी के कंटेंट को उसके हैशटैग से आसानी से खोजा जा सकता है। हैशटैग सिंबल को पौंड साइन के नाम से भी जाना जाता है। इसे पौंड साइन इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह सिंबल भार की यूनिट सइ से लिया गया है।

रेड नंबर्ज के फेर में उलझे लोग न केवल इसके महत्व से परिचित हैं, बल्कि अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इसका बहुतायत में उपयोग भी कर रहे हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया में सक्रिय लोग हैशटैग के जरिए अपनी पोस्ट की पहुंच और प्रभावकारिता बढ़ा रहे हैं।

हैशटैग क्यों

सोशल मीडिया पर किसी भी सामग्री को साझा करने का मुख्य उद्देश्य यही होता कि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों के समक्ष पहुंच सके। हैशटैग के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके जरिए सोशल दुनिया के वे लोग जो आपकी फ्रेंडलिस्ट में नहीं हैं या आपको फॉलो नहीं कर रहे, वे भी आपसे जुड़ सकते हैं, चाहे वे विश्व के किसी भी कोने में बैठे हों।

हैशटैग, तकनीकी विषय पर आधारित एक प्रबल माध्यम है जिसका यथोचित उपयोग किसी भी पोस्ट को प्रभावी बना सकता है। जब सोशल मीडिया पर # का इस्तेमाल शुरू हुआ, किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि यह छोटा सा सिंबल एक दिन आम आदमी का सबसे सरल व सक्षम हथियार बन जाएगा। इसका मकसद एक ही विषय पर चर्चा कर रहे अलग-अलग लोगों को एक-दूसरे से जोड़ना था। उदाहरण के तौर पर किसी भी सन्देश या लिंक साझा करते हुए इसके वर्णन में #samvad_setu लिखा जाए, तब यह अपने-आप एक लिंक में परिवर्तित हो जाएगा तथा इस पर क्लिक करके वह सभी सन्देश पढ़े जा सकते हैं, जहां-जहां इसका अक्षरशः प्रयोग हुआ हो। किसी भी हैशटैग पर क्लिक करने पर, आप उस विषय से सम्बंधित सभी अन्य ट्वीट्स देख सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप #bahubali पर क्लिक करेंगे तो आपको विभिन्न लोगों द्वारा बाहुबली फिल्म के बारे में जो ट्वीट या पोस्ट किए गए हैं, वे सभी एक ही पेज पर मिल जाएंगे।

कारोबारी जगत की गलाकाट स्पर्धा के दौर में विभिन्न कंपनियां इस तकनीकी हथियार का बखूबी इस्तेमाल कर रही हैं। तमाम छोटी बड़ी कम्पनियां अपने उत्पादों के बारे में जानकारी देने के हैशटैग का इस्तेमाल करती हैं। इस तरह ये तमाम उत्पादों की हैशटैग के जरिए ब्रांडिंग का कार्य कर रही हैं। हर आविष्कार की ही तरह हैशटैग की भी न केवल हर समय दुरुपयोग की संभावना बनी रहती है, बल्कि कई लोगों व संस्थाओं को इसके दुष्परिणाम भी झेलने पड़ते रहे हैं। हैशटैग के इस्तेमाल को लेकर फिलहाल कोई गाइडलाइंस या नियम नहीं बनाए गए हैं। इस वजह से कई बार इसका इस्तेमाल गलत तरीके से भी होता है। किसी सेलीब्रिटी का बयान या उससे जुड़ी किसी बात को किसी निश्चित हैशटैग के साथ सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जाता है, जिससे उसकी छवि खराब हो। हैशटैग की ही तरह ट्रोल का चलन हाल ही के दिनों में बढ़ा है।

माइक्रो ब्लॉगिंग वेबसाइट ट्विटर पर इसे अगस्त 2007 में पहले शुरू किया गया था। इससे पहले इसका इस्तेमाल न के बराबर होता था। हालांकि इसे ट्विटर ने नहीं, बल्कि किसी शख्स ने शुरू किया था। 23 अगस्त, 2007 को सबसे पहले गूगल के पूर्व कर्मचारी क्रिस मेसिना ने हैशटैग को अपने ट्वीट में इस्तेमाल किया था। जुलाई 2009 में ट्विटर ने पहली बार हैशटैग को औपचारिक रूप से अपनाया।

हैशटैग कैसे इस्तेमाल करें

कुछ बातों को ध्यान में रखकर हैशटैग के इस्तेमाल का अधिकतम लाभ लिया जा सकता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि फेसबुक पर एक या दो हैशटैग यूज करने से उस पोस्ट का इंटरैक्शन रेट 593 फीसदी तक बढ़ सकता है। कोई भी पोस्ट करते वक्त ध्यान रखें कि # के साथ इस्तेमाल होने वाले शब्द व उनकी स्पैलिंग बिल्कुल सही होने चाहिएं।

इसका ध्यान रहे कि एक ट्वीट में चार से ज्यादा # का इस्तेमाल न करें। हैशटैग इस्तेमाल करते समय उसी हैशटैग के बारे में लिखें। उदाहरण के तौर #media हैशटैग के साथ पत्रकारिता से जुड़े मुद्दों की चर्चा करें। यदि आप इस हैशटैग के साथ किसी दूसरे मुद्दे पर चर्चा शुरू कर देंगे, तो आप उपहास का पात्र बन जाएंगे। जिस हैशटैग के बारे में आपको पता न हो, उस पर प्रतिक्रिया न दें। कम लिखें, पर अच्छा लिखें। हैशटैग का सही इस्तेमाल करने के लिए सबसे जरूरी है कि यूजर का प्रोफाइल पब्लिक हो, क्योंकि बिना पब्लिक प्रोफाइल के हैशटैग का यूज प्रभावशाली नहीं होता है।

एमसीयू का सत्रारंभ समारोह

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय ने मीडिया-शिक्षण में एक अभिनव प्रयोग करते हुए विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने वाले नए विद्यार्थियों के लिए सत्रारंभ आयोजन प्रारंभ किया है। इसका उद्देश्य पत्रकारिता की पढ़ाई के प्रारंभिक दिनों में विद्यार्थियों में पत्रकारीय प्रवृत्तियों को पैदा करना, देश के समक्ष उपस्थित प्रमुख मुद्दों की तथ्यात्मक स्थिति से उन्हें परिचित कराना और विद्यार्थियों को अपने अभिमत गढ़ने के लिए प्रेरित करना है। इस अंक में सत्रारंभ कार्यक्रम की एक विस्तृत रिपोर्ट इस मंतव्य से दी जा रही है कि यह अन्य विश्वविद्यालयों के संचार विद्यार्थियों और पत्रकारों के लिए उपयोगी होगी।

देश के मुख्य चुनाव आयुक्त ओपी रावत ने कहा कि आज मीडिया ही चुनाव पर छाया हुआ है। विश्व भर के प्रजातंत्र देशों में जनमत को किस तरह से 'डाटा हार्वेस्टिंग' करके प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है, इसके उदाहरण हमारे सामने हैं। आने वाले समय में हमारे देश में भी चुनाव होना है। चुनाव में पेड न्यूज और फेक न्यूज का मुद्दा आम है। राजनीतिक दल भी इसे लेकर चिंतित हैं। इससे निपटने के लिए चुनाव आयोग कई कदम उठा रहा है। सत्रारंभ-2018 में 'निर्वाचन और मीडिया' विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पेड न्यूज को लेकर के मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मॉनिटरिंग कमेटी बनाई गई है, जिसमें पेड न्यूज का पता करने की प्रक्रिया तय की गई है। चुनाव आयोग से सोशल मीडिया चला रही कंपनियों ने कहा कि वे चुनाव प्रभावित नहीं होने देंगे और चुनाव के 48 घंटे पहले चुनाव से संबंधित कोई सामग्री सोशल मीडिया पर प्रकाशित नहीं करेंगी। श्री रावत ने कहा कि आने वाले चार राज्यों के चुनाव के दौरान इसका परीक्षण हो जाएगा और इसके बाद होने वाले लोकसभा चुनाव में भी यह सुनिश्चित हो जाएगा कि सोशल मीडिया से चुनाव प्रभावित न हो। उन्होंने कहा के संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत चुनाव आयोग को निष्पक्ष चुनाव निदेशन, अधीक्षण और नियंत्रण के लिए शक्ति दी गई है। उच्चतम न्यायालय ने इसी अनुच्छेद के तहत चुनाव आयोग को शक्ति प्रदान की है कि जब भी कोई परिस्थिति ऐसी आती है जिससे निपटने के लिए स्पष्ट कानून न हो तो चुनाव आयोग कानून भी बना सकता है। इस 'प्लेनरी पॉवर' के कारण ही चुनाव आयोग ने एक राज्य में चुनाव के पहले 90 करोड़ रुपये बांटे जाने की घटना के बाद चुनाव न कराने का फैसला लिया था।

विद्यार्थियों के प्रश्नों का जवाब देते हुये रावत ने कहा कि आज हमारे देश में हर काम सूचना प्रौद्योगिकी को लेकर हो रहा है। तब हम वापस मत पत्र से कैसे चुनाव करवा सकते हैं। क्या हम वापस बूथ केप्चरिंग वाले दौर में जाना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि तकनीक के उपयोग से चुनाव सरल और सुलभ हो गए हैं। भारत में उपयोग की जा रही ईवीएम मशीन विश्व भर में अनोखी है और वीवीपेट से जुड़ने के बाद वहीं मतों की संख्या को दोबारा जांच सकते हैं। ईवीएम में टेम्परिंग नहीं हो सकती, उसमें ऑसीलेटरी सर्किट नहीं हैं। इस कारण मशीन को किसी दूसरी मशीन से नहीं जोड़ा जा सकता। टेम्परिंग किये जाने पर वह लॉक हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि चुनावी खर्च पर नियंत्रण के लिए व्यापक विचार-विमर्श किए जाने की जरूरत है। चुनाव आयोग, चुनाव में धन का दुरुपयोग किये जाने पर नियंत्रण के लगातार प्रयास कर रहा है। नोटा को लेकर पूछे गये प्रश्न पर उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय के आदेश के तहत नोटा लागू किया गया था।

'एक देश एक चुनाव' के सवाल पर उन्होंने कहा कि देश में एक साथ चुनाव कराने के लिये लगभग 32 लाख ईवीएम मशीन चाहिए। अभी आयोग के पास 15.16 लाख मशीनें हैं। इसके अलावा संवैधानिक प्रावधानों में भी संशोधन आवश्ययक है। एक साथ चुनाव कराने के लिए केन्द्रीय पुलिस बल भी बड़ी संख्या में चाहिए।

राज्यासभा टीवी के सम्पादक राहुल महाजन ने कहा कि पहले पत्रकारों को सम्मान मिलता था, लेकिन अब परिस्थिति बदलती जा रही है। आम जनता पत्रकारों को उस नजर से नहीं देखती, शक की नजरों से देखने लगी है।

पत्रकारिता ही एक ऐसा पेशा है, जिसमें लोगों की भलाई करने के लिए सबसे ज्यादा जगह है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि इस पेशे को साफ-

सुधरा बनाने की जिम्मेदारी नये पत्रकारों की है। पत्रकारों को लिखना कोई भी सीखा सकता है परन्तु पत्रकारिता में सही राह पर चलने का प्रण हमें खुद लेना पड़ेगा।

शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार और सम्पारद श्री महेश श्रीवास्त्व ने कहा कि भारतीय पत्रकारिता विदेशी पत्रकारिता से अलग है। हमें विदेशी पत्रकारिता से तकनीक और नवाचार सीखना चाहिए लेकिन व्यावसायिकता से दूर रहना चाहिए। पत्रकारिता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाये, लेकिन लोकहित और राष्ट्र कल्याण की बात है तो पत्रकार को सकारात्मतक भी देखना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है, तो पत्रकार समाज के भी प्रतिपक्ष बन जाते हैं। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता धर्म है, इसे धारण किया जाता है, ज्ञान की तरह सम्प्रेषण किया जाता है, सत्य इसमें संघर्ष की प्रेरणा देता है और संघर्ष अभय प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि पत्रकार जीवनभर शिष्य बना रहता है लेकिन गुरु की गरिमा को प्राप्त करता है। वह पूर्ण नहीं है लेकिन अपूर्ण भी नहीं होता है।

कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति श्री जगदीश उपासने ने कहा कि हम किसी भी माध्यकम से भाषा को समृद्ध कर सकते हैं। पत्रकारिता में सारी ताकत शब्दों में ही है, शब्द के सहारे पत्रकार अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। तथ्यों की शुद्धता रहनी चाहिए और अपने विचार देते समय लोकहित, जनहित का ध्यान रखना चाहिए। किताब पढ़ने के साथ ही सुनने एवं ऑनलाइन माध्यमों के माध्यम से भी आधुनिक समय में शब्द भंडार को बढ़ाया जा सकता है। एक अच्छे वक्ता की ताकत उसका शब्द भंडार होती है। उन्होंने अमेरिका में ट्विन टावर पर हुए हवाई हमले का उल्लेख करते हुए देशहित के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस हमले में केवल हमले की फोटो सामने आयी जो एक फ्रीलांसर विडियोग्राफर ने खींची थी और दूसरी फोटो ग्राउंड जीरो पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम की थी। इसके बीच घटी घटना को मीडिया ने बिल्कुल नहीं दिखाया। इसके पीछे अमेरिका के पत्रकारों की राष्ट्रहित में खड़े होने की मंशा थी।

सत्रारंभ समारोह में 'बदलता आर्थिक परिदृश्य और भारत' विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए पेसिफिक विश्वाविद्यालय, उदयपुर के कुलपति श्री भगवती प्रकाश शर्मा ने कहा कि भारतीय युवा सम्पूर्ण विश्व की आशा की किरण है, क्योंकि भारत के पास युवाओं की फौज है और दुनिया के फॉर्च्यून 500 कंपनियों के सीईओ और प्रमुख भारतीय या भारतीय मूल के हैं।

आज इटली, ब्राजील और फ्रांस को पीछे छोड़कर भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। क्रय क्षमता में भारत विश्व में चीन, अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर है। वहीं उत्पादन के मामले में चीन पहला, अमेरिका दूसरा और जापान तीसरे स्थान पर है। भारत को जरूरत है कि वो अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाये और विश्व का अग्रणी बने। भारत में हर साल सवा करोड़ युवाओं को रोजगार की जरूरत है, इसलिए उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्व की अर्थव्यवस्था में प्रतिष्ठित स्थान पाना है तो युवाओं में उद्यमिता का बीजारोपण भी करना होगा। उन्होंने तकनीकी राष्ट्रवाद की भी चर्चा की, जिनमें कोरिया, चाइना और जापान विश्व के अग्रणी देश हैं। उन्होंने अर्थशास्त्रीय राष्ट्रवाद पर भी चर्चा की और कहा कि दुनिया में 'ट्रेड वॉर' चल रहा है। हर विकसित देश अपने से छोटे देशों को व्यापार के जरिये गुलाम बनाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने बताया कि जापान में सिर्फ चार प्रतिशत विदेशी कारें बिकती हैं, जिसे वही लोग खरीदते हैं, जिन्हें कार संग्रह का शौक है। भारतीय अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए भी इसी तरह के अर्थशास्त्रीय राष्ट्रवाद की आवश्यककता है। आने वाला समय आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का होगा।

सत्रारंभ कार्यक्रम के चतुर्थ सत्र में 'जम्मू-कश्मीर : वर्तमान व भविष्य' विषय पर बोलते हुए जम्मू व कश्मीर अध्ययन केंद्र के निदेशक एवं हिन्दुस्थान समाचार एजेंसी के पूर्व संपादक श्री आशुतोष भटनागर ने बोलते हुए कहा कि जम्मू व कश्मीर पत्रकारिता में रुचि का विषय रहा है। जब-जब देश किसी चौराहे पर आकर खड़ा हुआ मीडिया ने अपनी भूमिका निभाई। आज जम्मू-कश्मीर को लेकर जो विवाद है वो सूचनाओं के अभाव के कारण है। आज केवल राज्य का 47

प्रतिशत हिस्सा ही भारत के पास है जबकि 35 प्रतिशत हिस्सा पाक अधिकृत जम्मू एवं कश्मीर के रूप में पाकिस्तान के कब्जे में है, बाकी हिस्सा चीन के कब्जे में है। सत्र का संचालन संचार शोध विभागाध्यक्ष डॉ. मोनिका वर्मा ने किया।

'टीवी एंकरिंग की चुनौतियां' विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आज तक के प्रसिद्ध एंकर श्री सईद अंसारी ने कहा आज तकनीक ने सभी को पत्रकार बना दिया है, ऐसे में सबसे बड़ी चुनौती यही है कि हम अपनी निष्पक्षता को बनाए रखें। एक पत्रकार के नाते आप सभी के दर्द को समझें। धर्म-समुदाय से ऊपर उठकर विश्वास के साथ पत्रकारिता करें और ऐसा तभी संभव है जब आप ईमानदार होंगे। हर पत्रकार चाहता है कि रिपोर्टिंग के दौरान उसे सम्मान मिले। ऐसा तभी होगा जब आप सभी विचारधाराओं से ऊपर उठकर, किसी भी तरह के पूर्वाग्रह को त्यागकर, तथ्यों की अच्छे से जांच-पड़ताल कर निष्पक्ष पत्रकारिता करेंगे।

टेलीविजन पत्रकारिता में आपको किसी भी समय रिपोर्टिंग और एंकरिंग के लिए खड़ा कर दिया जाता है। किसी भी विषय पर आपको कभी भी बोलना पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको तकनीकी रूप से सक्षम होना पड़ेगा। खूब पढ़ें और सवाल पूछना कभी ना भूलें, चाहे आप कितनी ही भीड़ में क्यों न हों। सत्र का संचालन विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने किया।

'वैश्विक आतंकवाद, सूचना प्रौद्योगिकी और संचार' विषयक सत्र में श्री विवेक अग्रवाल ने कहा कि आज के समय में साइबर सिक्योरिटी सबसे बड़ा चिंता का विषय है। आज आईएसआईएस, लिट्टे जैसे तमाम आतंकवादी

संगठन इंटरनेट एवं साइबर सिस्टम का दुरुपयोग कर अपनी आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं। आतंकवादी संगठन युवाओं को जोड़ने के लिए विभिन्न सोशल मीडिया ऐप, ऑनलाइन गेम्स का सहारा ले रहे हैं, जिनके जाल में युवा धर्म के नाम पर फंस जाता है। हैकिंग के माध्यम से किसी भी बैंकिंग सिस्टम, एटीएम, हेल्थ सिस्टम, वाटर सप्लाई सिस्टम, बिजली सप्लाई सिस्टम को आसानी से चंद सेकण्डों में हैक किया जा सकता है। हमें इंटरनेट एवं तकनीक के दुरुपयोग एवं नुकसान के बारे में जागरूक रहने की आवश्यकता है।

वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री आलोक मेहता ने कहा कि मीडिया में जाने वाले विद्यार्थियों को ग्लैमर देखकर के इस क्षेत्र में नहीं जाना चाहिए, बल्कि ज्ञान को ध्यान में रखकर आना चाहिए। टीवी, रेडियो और प्रिंट मीडिया एक-दूसरे के प्रतियोगी नहीं है, बल्कि पूरक हैं। मीडिया में हर समय चुनौती रही है, आगे भी रहेगी। प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे बड़ा खतरा नकल की होड़ है। प्रिंट मीडिया का भविष्य असुरक्षित नहीं है। जब टेलीविजन आया उस समय भी इस तरह के सवाल उठे, लेकिन आज भी मुद्रित माध्यमों को पढ़ा और पसंद किया जा रहा है। हमारे सामने चुनौतियां जरूर हैं। आर्थिक संकट भी है लेकिन निराशा की जरूरत नहीं है। पत्रकारिता के छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा प्रिंट के अच्छे भविष्य के लिए बेहतर विज्ञापन कॉपी लिखना सीखना चाहिए। आज कई विदेशी कम्पनियां देश में निवेश कर रही हैं, उन्हें हिंदी में विज्ञापन की जरूरत है। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को विज्ञापन कॉपी लिखना भी आना चाहिए। इस अवसर पर विश्व विद्यालय द्वारा प्रकाशित मीडिया नवचिंतन पत्रिका के नवीन अंक, मीडिया प्रबंधन विभाग द्वारा अटल प्रबंधन वाणी, सत्रारंभ पर केन्द्रित आंतरिक समाचार पत्र सत्रारंभ-2018 का विमोचन किया गया।

श्री ज्ञान चतुर्वेदी ने सत्रारंभ कार्यक्रम के द्वितीय दिवस को 'सृजनात्मक लेखन' विषय पर चर्चा करते हुए कहा लेखन में सृजनात्मकता तभी संभव

है जब हम अपने वातावरण को विभिन्न दृष्टिकोण से देखें। संवेदनशील बनें। किताबी परिभाषाएं पढ़कर सृजन संभव नहीं है। अगर हमें जीवन के बारे में लिखना है तो जीवन में उतरना होगा, उसको आत्मसात करना होगा। इसके लिए एक सृजनात्मक लेखक में परकाया प्रवेश और भाव प्रवेश की कला होनी चाहिए।

गंगा की गहराई को समझने के लिए हमें गंगा में उतरना होगा। पुल पर खड़े होकर हम गंगा की गहराई नहीं माप सकते। लेखन के लिए हम अपनी प्राथमिकता तय करें। रचनात्मक लेखन में सौन्दर्य तभी डाला जा सकता है जब हम मनसा, वाचा, कर्मणा लेखन में डूब जाएं। सिर्फ शब्दों का मायाजाल पसारकर सार्थक लेखन संभव नहीं है। लेखन में जान तभी आती है, जब उसकी संवेदना को आत्मसात किया जाए। उन्होंने कहा कि भाषा गहना है वे शरीर नहीं है, इसलिए विचार महत्वपूर्ण है। स्वयं लेखन को ही तय करना होता है कि उसके लेख के लिए कौन-सी भाषा उपयुक्त होगी। लेखन के लिए मुमुक्षा होना आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विभागाध्यक्ष प्रो. श्रीकांत सिंह ने किया।

'मीडिया उद्यमिता' विषय पर श्री हेतल राच ने कहा कि मीडिया उद्यम में सफलता के लिए कंटेंट का विशेषज्ञ होना आवश्यक है। जो डाटा तीन साल पहले अत्यंत महंगा था, वो आज एक जीबी डाटा प्रतिदिन सस्ते में मिल रहा है। नए उद्यमी को केवल उस डाटा में अपना हिस्सा तय करना है। नए ग्राहक तलाशने की जरूरत है। इसी सत्र में अद्वितीया सिन्हा ने 'सोशल मीडिया शोध' को लेकर के विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया पर लोगों के द्वारा पोस्ट किये जा रहे संदेशों का विश्लेषण किया जा सकता है, इसके लिए ऑनलाइन टूल उपलब्ध हैं। उन्होंने ट्वीटर की केस स्टडी के माध्यम से बताया कि किस तरह से सोशल मीडिया के ट्वीट्स पर सेंटीमेंटल ऐनालिसिस किया जा सकता है।

'मीडिया उद्यमिता और युवा' विषय पर प्रबंधन विशेषज्ञ अभिषेक गर्ग ने बताया कि उद्यमिता और व्यापार के बीच में बड़ा अंतर है। उद्यमिता में उद्यमिता केल्क्यूलेटेड रिस्क लेता है, उद्यम करने वाला व्यक्ति हमेशा अवसर देखता है। आज सभी उद्यमी वेल्यू क्रियेशन का कार्य कर रहे हैं, उन्हें बहुत बड़ा लाभ भले ही न हो। कई कंपनियों ने स्टार्टअप के लिए फंड बनाये हुए हैं और वे उसे देते भी हैं। सत्र का संचालन प्रो. मनीष माहेश्वरी ने किया।

सत्रारंभ सत्र के द्वितीय दिवस में कुलसचिव प्रो. संजय द्विवेदी ने नव प्रवेशित विद्यार्थियों को विश्व विद्यालय के इतिहास से रू-ब-रू कराया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी का संपूर्ण विकास करना ही विश्वविद्यालय का उद्देश्य है। नीति आयोग के सहयोग से देश का पहला इन्यूयार बेशन सेंटर विश्वविद्यालय में स्थापित किया गया है। भोपाल के बिशनखेड़ी में 50 एकड़ भूमि पर विश्वविद्यालय का आधुनिक तकनीक से युक्त शैक्षणिक एवं आवासीय परिसर का निर्माण किया जा रहा है। इसी सत्र में 'पारस्परिक संबंध' विषय पर पत्रकारिता विभागाध्यक्ष डॉ. राखी तिवारी ने कहा कि आज युवाओं के सामने ज्यादा चुनौतियां हैं। इस कारण संबंधों को लेकर के प्रतिबद्धता का अभाव है। उन्होंने एक सर्वे का उल्लेख करते हुए कहा कि मन, वाणी और कर्म से यदि हम पारदर्शिता और ईमानदारी रखेंगे तो पारस्परिक संबंध हमेशा ठीक रहेंगे। 'परीक्षा' विषय को लेकर परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजेश पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रदेश में पहला ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसने पहला राष्ट्रीय अकादमिक डिपॉजिटरी के लिए पंजीयन शुरू कर दिये हैं। सभी विद्यार्थियों को इसमें अपना पंजीयन कराना आवश्यक है।